

देहान्तर

नन्दकिशोर आचाय के दो नाटक



वाग्देवी प्रकाशन
बीकानेर

देहावतार

नन्दकिशोर आचार्य



वार्देवी प्रकाशन
मुगन निवास चम्पन सागर
बीकानेर 334 001

नाटका की रंगमंचीय प्रस्तुति के लिए
लेखक से पूरा अनुमति लेना अनिवार्य है ।

नन्दकिशोर आचार्य
मुधारी की बड़ी गुवाड,
बीकानेर 334 001

। नन्दकिशोर आचार्य

प्रथम संस्करण 1987
द्वितीय संस्करण 1990

ग्रहण ध्यान रखते मात्र

आवरण अमित भारती

मुद्रक साबिता प्रिंटर्स
मुगन निवास चम्पन सागर
बीकानेर 334 001

ISBN 81 85127 24 7

DEHANTAR by Chand Kuthore Acharya

Rs 50 00

मरी आत्मा की परम धम्मा-रूप !
मरी नाति ।

‘—ताम द वर मुम्ह तीसुवा तही बढेला
बराबि मुम मम्भूत मरी न
मुम्ह मुम हो बढेला ।—

सुमनाह पिण

प्राग

अथवा	९
विमिश्रितम्	५१

देहावतार

बेहातर ती प्रथम प्रस्तुति प्रसिद्ध नाट्य मण्डली अभिनेत द्वारा
28 परवरी, 1986 को चडीगढ मे हुई ।

निदेशक पहलाद अग्रवाल
चोरेन्द्र महदीरत्ता

पात्र

गमिष्ठा	गोल्डी मर्होत्रा
गयानि	अरविन्द नन्दा
पुरु	तृप्पुबुमार बातिया
विदुमती	सपना मर्होत्रा
मनन	अनिता शर्मा
रक्षक	रवि मर्होत्रा

एक अविस्मरणीय स्मृति

किसी भी नाटक को प्रस्तुत करने से पहले रगमण्डली अभिनेत के सदस्यों के सम्मुख नाट्यकृति का पढा जाना मात्र औपचारिकता नहीं है— एक पूरा अनुभव है। इस तरह की समावा में हुई चर्चा-परिचर्चा के दौरान हमेशा नाटक की रग-सरचना के बारे में ज्ञान बढ़ा है और नाटक की समझ में भी वृद्धि हुई है। असल में इस मण्डली में विविध क्षेत्रों के ममज्ञ हैं, प्रोफेसर हैं, इंजीनियर और आर्किटेक्ट हैं, व्यवसायी हैं और चित्रकार भी, प्रशासक और छात्र-छात्राएँ भी। इसलिए हमारी इस मण्डली में जिस दिन चर्चा की दृष्टि से नाटक का पाठ होता है, उसी दिन से नाटक के विविध पक्षों और उसकी परता की पहचान की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। विशेष रूप से जब नाटक कुछ सदस्यों को पसंद आये और कुछ को न आये— तब तो केवल परतें ही नहीं खुलती, बगिये भी उघड़ने लगते हैं। किंतु देहातर के पाठ के बाद ऐसा कुछ नहीं हुआ और सभी सदस्यों ने भुक्त वण्ट से इसकी प्रशंसा की और इसे अभिनेत द्वारा प्रस्तुत करने के लिए स्वीकार कर लिया गया। देहातर बाह्य एवं भीतरी तनावपूर्ण स्थितियों से भरपूर अपने में पूर्ण सशिष्ट नाट्यकृति है और इसका सुसंगठित रूपाकार एवं रगशिल्प का सौष्ठव हम कृति का आयोजन केन्द्र माना गया। इस नाटक में तनावपूर्ण नाटकीय स्थितियों का समुचित संयोजन है और इसकी शिष्टता भी है कि प्रेक्षक का निरंतर उलझाव रहे, आकार में छाटा है पात्रों की संख्या कम है तथा दिना किसी रगमचीम सामग्राम के गेला जा सकता है।

पिछले कुछ वर्षों के रगचम के बाद मेरा यह विश्वास बनता जा रहा है कि निर्देशन की प्रतिभा से चमत्कारी रगतन्त्र के सहयोग से रूप रत्न वाली नाट्य प्रस्तुति भले कितनी ही प्रभावपूर्ण क्या न हो, उससे किसी भी भाषा के रग आन्दोलन की शक्ति नहीं मिलती। ऐसी प्रस्तुतियाँ रगमच का स्तर भले ही दें, गति नहीं देती। ठीक इसी तरह से हमें नाटक का जटिल रगतन्त्र का आश्रय लेकर ही प्रस्तुत किये जा सकें— रग आन्दोलन को गति नहीं देते। रग-आन्दोलन को गति मिलती है साहित्यिक शरिमामण्डित रग नाटकों से। मोहन रायग तथा गुरद बर्मा के नाटक इसी कोटि के मानता

हूँ। हिन्दी नाटकाएँ तो एक बार जान का ग्याना भी अखण्ड रूपना चाहिए कि वह ऐसा नाट्य किम ना भारतीय रंग स्थिति के अनुकूल है और सुविधा के साथ भारत के अट-व-ठर तरल के गहरा म गला जा सके— यद्यपि नाट्य एक सामूहिक अभिप्राय और यही माधुर्य ध्यापक प्रदाना में निहित है। भारत में ही नाट्य रूप माना जायगा जिसके दो चार प्रदाना में ही हमने रंग सामर्थ्य का अनुमान हो जाय और पत्रम्य रूप अपने आप ही उगवा अथ भारतीय भाषाओं में अनुवाद होन लगे। आद्य अक्षर, हयपदन, राणी इतिहास, यामीराम कावास कुछ इसी प्रकार के नाटक हैं। दशावत में भी इसी प्रकार के नाट्य की बहुत-सी गुरियाँ हैं।

इस नाटक का हमारा एक ध्येय है। म सदा का फसला दिया जहाँ प्रकाश माना ही बाड़ी सुविधा थी। दृश्यवर्ध के नाम पर एक दीपाधार, एक गयन सीमा और बैठन के एक आसन के अंगवा किसी रंग उपकरण का प्रयोग नहीं किया। यैसा दा तम टाँपा में समती जिन्हें उठाकर आमाती से एक गमह से दूमेगी जगह रखा जा सके। मच पर उम दाया पर नीले लाल और पीले रंग की छादरा तथा स्थान परिवर्तन में उम शर्मिष्ठा के निजी का, यद्यपि वे गयन रंग, तथा पुर के केश में परिवर्तित किया गया। इस रंग परिवर्तन में अलग अलग कथा के सक्त इतने प्रभावी ठग से दिय कि स्वयं का भी आश्चर्य हुआ। पहले दृश्य में तथा शर्मिष्ठा के रंग में दीपाधार का प्रमुख स्थान पूरा दृश्य की गवेदना में प्रकट करा तथा सम्प्रेषित करन में महापक् मिद्ध हुआ। दीपाधार को मच में बायी और अधभाग में रखा था। नाटक के अन्त सबदनपूण स्थला की योजना बायी और के अधभाग में करना उपयोगी समझा गया। पाता के बाय-यापार की दृष्टि से बल उपयोगी रंगमंच द्वारा दृश्य के की योजना का सिद्धांत हमारी मण्डली के अध्यापक नवीनचन्द्र टाकुर का ही नयी रंगसञ्ज्ञाकार ज्ञान्दिय प्रकाश का भी है। रंगमच में राजमी स्वरूप देने के लिए बहुत साधन पर भी विशेष कुछ नहीं किया। मैं अनुभव किया कि अभिनताओं की बगलवा राजमी स्वरूप देने में पर्याप्त है। आदरा के रंग के अनुकूल प्रकाश योजना में प्रतीकारमक रंग का प्रयोग उपयोगी सिद्ध हुआ।

येनाएँ नाटक की मजस उठी विशेषता है तनावपूण नाट्यप्रतिरुतिया की सुगम माना और हमने परिणाम स्वरूप शर्मिष्ठा, यद्यपि, विदुमतों तथा पुर का मानसिक द्वन्द्व। इस प्रस्तुति में यद्यपि की भूमिका में अरविन्द नादा उपयुक्त के बार बड़ी महत्त के साथ उद्गान भूमिका की वारीकियों का गमगा। प्रत्येक संवाद के पीछे छिपे द्वन्द्व का उत्तरांतर उस जग गमयने

गय, ययाति का व्यक्तित्व अधिक उभर कर सामने आने लगा। नाटककार ने ययाति के जीवन की विडम्बना का बहुत ही कुशलता से रूप दिया है। जीवन क पूर्ण उपभाग में विश्वास रखने वाला ययाति मदा ही विडम्बनापूर्ण स्थिति को जीता है। दवयानी में विवाह किया, किन्तु दवयानी कच के प्रेम में कभी मुक्त नहीं हो पायी—इसलिए पूर्णरूप से उस प्राप्त नहीं कर पाया। शर्मिष्ठा में गुप्त विवाह किया, किन्तु शुनाचाय का डर बना रहा और इस रहस्य के प्रकट होते ही पाप झेलना पड़ा। शर्मिष्ठा को उन्मुक्त रूप से पाने के लिए क्षाप मुक्ति मिली और अपन पुत्र में यौवन उधार लिया—किन्तु वह मिला शर्मिष्ठा के ही पुत्र पुत्र में। इस में शर्मिष्ठा की स्थिति और भी विडम्बनापूर्ण हो गयी। पति में पुत्र के पारूप तथा यावत के कारण अब भी उन्मुक्त समागम सम्भव नहीं हुआ। शर्मिष्ठा का लगता है जैसा उसका पुत्र ही उसका उपभाग कर रहा है और उस भारी स्थिति से वितृष्णा होन लगी। वह ययाति से बचने लगी। नाटककार ने बहुत थोड़े सवादों द्वारा सम्पूर्ण स्थिति का निरूपण किया है। कुशल अभिनता अथवा अभिनेत्री के सम्मुख यह एक बहुत बड़ी चुनौती होती है जब नाटककार गहरे मानसिक द्वन्द्व की बात कम गद्गद द्वारा व्यक्त करना चाहता है। इस चुनौती का सत्रम अधिक सामना करना पड़ा शर्मिष्ठा की भूमिका में गाँधी महात्मा को। इस चुनौती को उन्होंने स्वीकार किया और वही-वही बहुत ही मार्मिक अभिनय किया। पति की देह में पुत्र के पारूप का महभूषण करने के द्वन्द्व और दुविधा का व्यक्त करने में उन्हें पर्याप्त सफलता मिली। जिस वाग्यत्मा समय से मार्मिक स्थिति की संवेदना को प्रक्षेपित किया, उसमें इस प्रस्तुति का प्राण मिला।

प्रेम नहीं, केवल रमण करती वाली देवलाक के महाराज रत्न की पुत्री विदुमती का क्या रूप दिया जाय? मात्र पर उसका प्रवेश कैसे कराया जाय? उसकी भविष्यताओं और चर्चाओं द्वारा उससे दयलोकवासिनी होना का आभास कैसे दिया जाय? इस भूमिका को निभाने वाली सपना महात्मा नृत्य में रुचि रखती थी। इसलिए नृत्य मुद्राओं, नृत्य गतियों एवं नर्तक भविष्यताओं द्वारा विदुमती के व्यक्तित्व की विनिष्टता को जाकार दन का प्रयास किया। उसकी उन्मुक्तहमी में उस के व्यक्तित्व के श्रीदामाव का अंकन किया। नाटककार ने विदुमती के द्वन्द्व का भी स्वरूप दिया है। — का धीरता और गौरव के प्रति जाकृष्ट होकर उसे पान के लिए विदुमती के द्वन्द्व से मृत्युलोक आती है। तब तब पुत्र का यौवन ययाति का यौवन नहीं, इसलिए ययाति का वरण कर लेता है। किन्तु इसका अर्थ ययाति की पुत्री नहीं होती और यह भी नहीं दूँती है। विदुमती के द्वन्द्व ययाति का यौवन

साक्षात्कार करती है। अपनी नियति को स्वीकार करन में ही प्रत्येक व्यक्ति की युक्ति है। 'स आत्म-साक्षात्कार के पश्चात् ही ययाति उन्मुक्त भाव में अपना पुत्राग का स्वीकार कर सवा तथा पुरुष की दावा का दूर कर गया। ययाति जैसा भी है पुर का पिता है, पुर का ईर्ष्याम ययानि का जीवन ? और लाग चाहने स भी यह उस स मुक्त गही हूँ मरता हूँ अगो माता पिता व शुभाव मे स्वतन्त्र नहीं है। हमारे अस्तित्व की धुरआन यही स हाती है और नियति के स्वीकार का पहला पाठ यही स्थिति देती है।

परमस्थिति का यह बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण है, बिन्दु मात्र का छाउ-छोट सवादों से इस पूरा प्रक्षेपण मिलता नहीं लगता। बहुत सचत और जागरूक प्रभाव ही इस बिन्दु को पकड़ पाता है। निर्देशक किस प्रकार इस विचार का सम्प्रेषित करें, यह बहुत बड़ी समस्या है। यहाँ नाट्यकार का किसी स्थानात्मक सवाद या किसी नाटकीय स्थिति की योजना बननी चाहिए या जिससे सामान्य प्रेक्षक भी विचार करने पर विवश हो।

निर्देशन के काम में मुझ से बही अधिक सक्रिय थे मेरे परम मित्र और सहयोगी पहलाद अग्रवाल। सवादों के सहयोग से ही रस्य बिम्ब और नाटकीय गतिमा का रूप देने में उन्होंने बहुत ही सूक्ष्मज्ञ का परिचय दिया। निर्देशन सम्बन्धी सभी प्रकार के बात का स्वयं खेल कर जिस उदारता के साथ मुझे उस का माा दिया उसके लिए कम उनका धन्यवाद बरूँ, समय नहीं पाता। निर्देशन की यह प्रक्रिया सभी रंग-कर्मियों के लिए सुखद रही अनजान ही नाट्य का मूड स्वर सभी रंग-कर्मियों तक नली भाति पहुँच गया था। सब ने अपनी नियति स्वीकार कर ली थी— और इस स्वीकार का परिणाम था एक सुखद अनुभूति, एक अविस्मरणीय स्मृति।

अश्वमेध ।

—बीरे व मेहबोरसा

अक प्रथम

पहला प्रवेश

राजमहल में शमिष्ठा का निजी कक्ष । अँधेरा था । शमिष्ठा एक ओर बठी है । मंगला का प्रवेश । उस की पदचाप सुनकर शमिष्ठा उठकर देखती है । दोनों की बातचीत के दौरान मंगला कोनों में दीपक जलाने का अभिनय करती है । मंच पर धीरे धीरे प्रकाश होता है ।

शमिष्ठा कौन ? मंगला ?

मंगला दासी प्रणाम निवेदन करती है । क्षमा करें, किसी न क्षमा तक दीपक नहीं जलाये ।

शमिष्ठा किसी का बोझ दाय नहीं है, मंगला । मैं न ही रोब दिया था ।

मंगला ऐसा क्या, देवी ? सम्याकाल में दीपक न जलाना अशुभ माना गया है ।

शमिष्ठा शुभ अशुभ तो मन के भ्रम हैं ।

मंगला ऐसा न कहें । राजमहल में ही अँधेरा हा तो प्रजा को प्रकाश की प्रेरणा कैसे होगी, देवी ?

शमिष्ठा अन्त पुर का उजाला मन के अँधेरे का तो नहीं मिटा सकता न ?

मंगला देव सब गुम करेगा । चन्द्रवक्त्र का पुण्य इतना क्षीण नहीं हा गया है ।

शमिष्ठा पुण्य क्षीण न हो तो धुक् कुपित ही क्या हाते ।

मंगला लेकिन उन्होंने तो शाप लौटा लिया है न ?

शमिष्ठा भोली हो तुम । एन की लौ से दूसरा दीपक तो बोझ भी जला देगा किन्तु

मंगला किन्तु क्या, देवी ?

शमिष्ठा अपना दीपक धुत्तावर उसका तल दूसरे दीपक में कौन डाल देगा, मंगला ?

- मगला दासी समझी नहीं ।
 गमिष्ठा चक्रवर्ती के बल-पौरुष का दीप सभी जल सक्ता, जब कोई अपना जीवन उह दंबर उनका बुझापा स्वेच्छा मर ।
 मगला तभी ता हताश होनी की कोई बात नहीं है, देवी ।
 गमिष्ठा नहीं, मगला । इतना सरल हाता यह मर ता गुनाचाय न यह छूट नहीं दी जाती ।
 मगला तो क्या
 गमिष्ठा हाँ । गुनाचाय अमुरा के गुद ह । प्रणिशेष की आग जपन गिप्पा स कम नहीं ह उनमें ।
 मगला तब उदारता का यह डोग क्या ?
 गमिष्ठा ताबि अमुर मरुष्ट रह । यह क्षाप अमुरी का दामाद का दिया है उहाने । अब वे वह सकेंगे कि अपना क्षाप लौटा लिया है उहाने ता । ओह यह क्षाप धुन न मुझे क्या नहीं दे दिया ?
 मगला आप
 गमिष्ठा मर ही कारण ता चक्रवर्ती का मह दिन देखना पडा । चक्रवर्ती पौरुष का यह परामर्श यह अपमान तुझे धिक्कार ह, गमिष्ठा । ओह भुक्त पापिन ने अपने सुन के लिए अक्ल चक्रवर्ती के धन और प्रताप को धून म मिला दिया ।
 मगला अपन को सँभाले देवी ।
 गमिष्ठा सँभालन का रह ही क्या गया है अब ?
 मगला आपने ही धन ला दिया ता चक्रवर्ती कैसे सँभलेंगे देवी ?
 गमिष्ठा उह कोई नहीं सँभाल सक्ता, मगला ।
 मगला ऐसा न कहे देवी ।
 गमिष्ठा तुम नहीं समझती । चक्रवर्ती पौरुष के पुजारी हैं । व जीवन के पूर्ण उपभोग में विश्वास करते हैं । उस इन्द्रोपम पौरुष को इस

अचानक ययाति का प्रवेश ।

- ययाति ययाति का पौरुष आज भी इन्द्रोपम ही ह, गमिष्ठा ।
 गमिष्ठा मगला (आश्चर्य एवं सम्भ्रमपूर्वक) चक्रवर्ती ।
 ययाति आश्चर्य हो रहा है न तुम्ह ?
 गमिष्ठा आश्चर्य ता है, दब अपने सौभाग्य पर ।

ययाति भ ने कहा था तुम्हें । ययाति के लिए यौवन तो क्या, प्राणों
तग करने वाला का भी अभाव नहीं होगा । मगजा ।

मगला आता, देव ।

ययाति मगला, इस अत पुर को हमारे हृदय की माति जगमगा दो,
हमारे सपनों की तरह सजा दो अपनी स्वामिनी को । यह
रात्रि हमारे मुक्त प्रेम की प्रथम रात्रि होगी ।

शर्मिष्ठा लेकिन

ययाति तुम नहीं समझोगी, शर्मिष्ठा । देवयानी के रहते हम कभी
मुक्त मन से नहीं मिल पाये । किसी अपशब्द-भी घेरे रहती
थी उस की छाया । अब न उस का भय है, न उस के पिता का ।
जाओ, मगला । देखो कोई कभी न रहे । हमारे मिलन की
एक और प्रथम रात्रि है यह ।

मगजा जो आज्ञा, देव ।

मगला जाती है । ययाति शर्मिष्ठा की ओर बढ़ता है । उसके
ननों कंधों पर हाथ रखता है । शर्मिष्ठा कुछ सकोच में है ।

ययाति क्या बात है, शर्मिष्ठा ? सकोच क्या ?

शर्मिष्ठा जाने क्या लग रहा है, आर्य ।

ययाति क्या ?

शर्मिष्ठा मेरे कारण कितना सहा आपन देवयानी का बाप सुमा-
चाय का दाप मुल-सरीखी एक साधारण स्त्री के कारण
चक्रवर्ती का अपमान ओह मैं क्या चली आयी उस दिन
आपक पास ।

ययाति नहीं ता मैं कैसे जानता कि प्रेम क्या होता है ?

शर्मिष्ठा देवयानी

ययाति ताम न ला उस का ।

शर्मिष्ठा दो पुत्र दिय हैं उसने आप को ।

ययाति हाँ । किन्तु देवयानी कभी एवान्त मेरी नहीं हो सकी ।

शर्मिष्ठा क्या क्या कह रहे हैं आप ?

ययाति वही जा सत्य है । उस की देह मेरी थी, पर चेतना कच के
रग म रगी थी । एक पल के लिए भी उसे नहीं मुला सकी
वह । (कुछ पलों की चुप्पी) जाननी हो प्रेम के घन छाया
म कभी उस न आज भर देखा भी नहीं मुझे । मैं समझता था

जि वर मेर प्रेम ग सुध पा देती ह त्रेकिन वह दम देह म
विभी और का भोजती रहो । चन्द्रर्त्ती ययाति की देह मे
मिगु कच का ।

शर्मिष्ठा नहीं, देव । भग भी हा सबता है यह आप का ।

ययाति नहीं । ययाति बच्चा नहीं है । सामरम पीकर मेरी दह से
वेसुध लिपटे कच का नाम

शर्मिष्ठा नहीं आर्य

ययाति हा, शर्मिष्ठे । इसीलिए मैं स्वय को अपराधी नहीं मानता ।
मैंन कोई विश्वासघात नहीं किया किसी से । (ठहरकर)
अथवा क्या अपने ही पति को कोई स्त्री इतना भयकर
दाप दिल्वा सकती है ?

शर्मिष्ठा आह चितती दारुण वेदना सहते रहे आप मुझे भी तहां
बतलाया कभी ।

ययाति तुम्ही ने तो प्रेम का अनुभव दिया मुझे । नहीं तो क्या शुक्रा
चाय के श्राध की उपेक्षा कर तुम्हारे पास आना सम्भव होता ।

शर्मिष्ठा ओ ! सहन नहीं कर पा रही हूँ मैं ।

ययाति जब उस अनील को भूल जाया, शर्मिष्ठे । दयानी मेरे
जीवन का अँधेरा थी । इस स्वर्णिम प्रकाश मे उन स्मृतिया
की पान्तिमा क्या घोलें ? (अचानक जैसे तेज हवा से दीपक
धुन जाते हैं ।) अरे, यह आँधी कैसी ? मगला मगला !
(मगला आती है ।) वातायन बंद कर दीपक जला दो !
(वातायन बंद करने और दीपक जलाने का अभिनय
करती है । धीरे धीरे प्रकाश हो जाता है ।) तुम इतनी
धवराई-सी क्या हा मगला ?

मगला वह बाहर

ययाति आह हाँ हा मैं तो अपने उत्साह म भूल ही गया था,
शर्मिष्ठे ।

शर्मिष्ठा क्या देव ?

ययाति मगला उह भीतरलाआ । (मगला जाती है । कुछ ठहरकर)
शर्मिष्ठे तुम्हारी कोमल आन चन्द्रका को घाय कर दिया
ह ।

शर्मिष्ठा मेरी काय न ?

ययाति तुम्हारे पुत्र न अपने अदभुत त्याग से जायग अजित किया
ह

बुद्ध बस म अक्षयन पुर ता प्रवेश । मगला उसो सँगाले है ।

शमिष्ठा पुर नही तुम महाराज पुर यह उही
ययाति हाँ, शमिष्ठा । उसी पितृभक्त सनान त्रिबाल म गरी
हाथी । हमो पुर ता ही अपना उत्तराधिकारी धारित किया
है ।

शमिष्ठा लेकिन पुर पुर ही क्या इतनी प्रजा अनुचर
जाह मैं जानती थी मैं ने कहा था

ययाति क्या ? क्या कहा था तुम ने ?

शमिष्ठा मैं ने कहा था मगला से गुप्तांगाय अमुरा के गुरु ह । वे
क्षमा नहीं करते ।

ययाति लेकिन चिन्ता क्या है, शमिष्ठा ? यह यौवन तो इसी का है ।
समय आज पर लाटा देंगे इसे ।

शमिष्ठा कुछ समय म नही आ रहा । यह इतना बड़ा त्याग
ययाति अपानक कुपित होता है ।

ययाति तुम्हारे पुत्र का धायन लेकर कुछ अपराध कर दिया हम न ?
शमिष्ठा पुत्र आप का है, चक्रवर्ती । मेरी ता केवल काय है ।

ययाति तुम्हें गध नही पुर पर ?

शमिष्ठा हमम बड़ा गध निरी न जाना नहीं होगा । लेकिन इतनी
देवता भी क्या किसी न जानी हागी ? (अचानक जस
सैमलकर) मगला, युवराज का आराम में पलग पर लिटा
दा । चक्रवर्ती, आज से पुर यही रह मेरे महल में ।

ययाति जैसा तुम चाहो लेकिन मैं

शमिष्ठा मगला ! प्रमाद के पिछे हिस्से को युवराज के लिए सजा
दा । (मगला जाती है) आप भी अब विश्राम करें, आय ।
मैं कुछ समय पुर के पास हूँ ।

ययाति हाँ हाँ, क्या नही । पुर की सारी दल भाए अब तुम्हें ही
करनी हागी । दृढावस्था भी एक प्रकार का वचपन ही तो
है ।

ययाति जाता है । शमिष्ठा धीरे धीरे पुर के पास जाती
है । पुर उठने की कोशिश करता है । शमिष्ठा उसे सहारा
दकर उठाती है और पलग के सिरहाने बिठा देती है । गौर
से उसकी ओर देखती है ।

शर्मिष्ठा तुम्हें मेरे दूध की सौगंध हैं, पुर । सच बहा, इतन लागा वे हाते तुम्हीं ने यह त्याग क्या किया ?

पुर कोई तैयार नहीं था, माँ । प्रजाजन अनुचर मंत्री । यहाँ तक कि सप्त भाई यदु अनु । मैं ही बचा था । पिताजी की वेदना मुझ से देखी नहीं गयी ।

शर्मिष्ठा ओह पुर, मेरे बेटे हमारे सुख के लिए
पुर नहीं, मा । अपनी ऋणमुक्ति के लिए ।

शर्मिष्ठा उस की ओर देखती रहती है । मच पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है ।

दूसरा प्रवेश

शर्मिष्ठा का शयन कक्ष । पलंग पर उदास भी अचलेटी है ।
अचानक ययाति का प्रवेश ।

ययाति शर्मिष्ठे ! प्रिय !

शर्मिष्ठा हड़बड़ाकर उठने का उपक्रम करती है ।

शर्मिष्ठा आप चन्द्रार्ति लविन आप तो

ययाति लेटी रहा । ऐसे ही लेटी रहा । हाँ, बस ऐसे ही

शर्मिष्ठा को पहले की ही तरह सक्रिय क सहारे बिठाकर
पलंग के पास घुटनों के बल बैठता हुआ उसके पाँव चूम
लेता है ।

शर्मिष्ठा यह क्या कर रहे हु आप ?

नहती हुई दूसरी ओर से पलंग स उतर जाती है ।

ययाति लेटी रहा न ।

शर्मिष्ठा लेकिन आप तो आखेट यात्रा पर

ययाति रह न सना तुम्हारे बिना । और उस मृग को देखकर तो

शर्मिष्ठा मृग को

ययाति हाँ । अपनी मृगी के संग रमण कर रहा था ।

शर्मिष्ठा तो ?

ययाति मृगी विद्ध हा गयी मेरे बाण से आह मृग का वह
विलाप मैं तुम्हारे लिए व्याकुल हा उठा ।

शर्मिष्ठा मृग के विलाप से मेरा स्मरण

ययाति हा, मृगी के लिए या न वह । आह, शर्मिष्ठे !

शर्मिष्ठा की ओर बढ़ता है ।

शर्मिष्ठा आप विधाम कर लें । भ जलपान की व्यवस्था करती हूँ ।

ययाति नहीं । तुम यही रहो मर पाम जा र मुने अपन भ हूय जान दा ।

उस पहल अपा जालिगन म ते रता है । शमिष्ठा होले स कि तु ददनापूवक अपन को उस स अलगवर मुँह फर राहो हो जाती है । ययाति कुछ पल उम को ओर दगता है ।

ययाति यह तुम्ह क्या होता जा रहा ह, शमिष्ठा ।
शमिष्ठा कुछ भी तो नहीं, आय ।
ययाति नहीं कुछ ता है । तुम कुछ छुपा रहो हा हम म ।
शमिष्ठा आप स छुपाने का हा ही क्या सक्ता है मेर पास ?
ययाति ता ता ऐसा क्या ह ।
शमिष्ठा बैस ही मन कुछ उदास-सा ह अभी ।
ययाति मैं अभी की बात नहीं कर रहा ।
शमिष्ठा ता ?
ययाति तुम जैस वही शमिष्ठा नहीं हा, बल्कि कभी-कभी तो अपरिचित-सी लगन लग जाती हा । क्या ऐसा क्या ह ?
शमिष्ठा मैं क्या कह सकती हूँ, देव ।
ययाति अब यही लो । पहले कभी एम नहीं बागी तुम हम स ।
शमिष्ठा मुझे ता नहीं लगता कुछ ।
ययाति तो मुझे ही क्यों लगता ह ?
शमिष्ठा मेरा दुर्भाग्य ! (बुछ देर मौन ।)
ययाति तुम्ह पुरा भा बहुत दु रा है ?
शमिष्ठा नहीं देव । उमने मेरे मातृत्व का गौरव लिया ह । कितन ह ऐस जा अपने पिता के सुख के लिए ऐसा त्याग कर सके ।
ययाति केवल पिता का सुख माता का नहीं ?
शमिष्ठा आप का सुख ही तो मेरा सुख ह ।
ययाति तब मेरे प्रति यह उदासीनता क्या ?
शमिष्ठा यह आराप है, आय ।
ययाति नहीं, यह मेरे अंतर की वेदना ह । कई दिन स तुम्हारे सामन श्रवट करना चाहता बा—पर साहस नहीं जुटा पाया ।
शमिष्ठा चक्रवर्ती और साहस नहीं जुटा पाय ।
ययाति हाँ, शमिष्ठा । समस्त जम्बूद्वीप का चक्रवर्ती सम्राट ययाति तुम स विजित ह आश्रित ह तुम्हारा । मुझे अपने स छुपा ला, शमिष्ठा ।

शमिष्ठा चक्रवर्ती ।
 ययाति कहन दो मुझे । दवयानी से भागकर तुम्हारे प्यार के आश्रय
 मे ही आता था मैं । उसकी ईर्ष्या निरन्तर डराती रहती
 थी मुझे उस के पिता का शोध अस्तित्व का वँपा दता
 था फिर भी

शमिष्ठा नहीं—उम सब का स्मरण नहीं करायेँ, दंव ।
 ययाति फिर भी फिर भी तुम्हारा आलिंगन ही मरा एकमात्र
 आश्रय था । तुम्हारी मुम्नान म उपाबाल की स्फूर्ति थी
 जार अब (शमिष्ठा की आर देवता है । वह नीचे की
 ओर दखने लगती है ।) तुम्हारे प्यार की वह उद्दामता
 कहा गयी, शमिष्ठे ? तुम्हारे अगा को एक कु ठा-सी धर
 रहती ह जसे । लगता है जैसे जैसे तुम वह शमिष्ठा
 हो ही नहीं ।

शमिष्ठा चक्रवर्ती भूल रह ह कि व स्वयं वही नहीं रह ह ।
 ययाति मैं ? नहीं ।
 शमिष्ठा मैं सत्य कहती हूँ ।
 ययाति किंतु उम की क्षिप्तव तुम म क्या ? तुम्हारे प्रेम म वह
 उद्दामता क्या नहीं जा मुझे आलोचित कर देती थी ?
 अब तो देवयानी की छाया से भी मुक्त ह हमारा प्यार ।

शमिष्ठा यदि ऐसा हो पाता ।
 ययाति क्या कहती हो ?
 शमिष्ठा हमारा जीवन उस छाया से कभी मुक्त नहीं हो सकता ।
 ययाति नहीं । अब कहा ह वह वाली छाया ?

शमिष्ठा है—मुझ पर आप पर और
 ययाति और पुरु पर भी । यही न ?
 शमिष्ठा हाँ । पुरु पर भी ।

ययाति नहीं, शमिष्ठा । वह चिन्ता छोड़ दो तुम । अब हम देवयानी
 से पूणतया मुक्त ह । पुरु का जीवन उधार है हम पर । एक
 दिन उसे मिलेगा ही साथ ही यह चक्रवर्ती राज्य भी ।

शमिष्ठा यह चिन्ता नहीं है मरी ।
 ययाति तो फिर क्या बात है ? क्यों पहल सी लिपट नहीं जाती तुम
 जब मैं तुम्हें छूता हूँ ? पहाड़ी नदी-सी जानुल देह काष्ठ-भी
 जड़ क्या हो जाती है ?

11. nat.

शमिष्ठा कुछ कठार भी हाती है।

शमिष्ठा वह हूँ तो सुन सकन आप ?

ययाति हाँ, हाँ, बहो बोलो।

शमिष्ठा नहीं। आप नहीं सुन सकेगें। सहन नहीं होगा आप स।

ययाति तुम्हारी उपक्षा से अधिक् असहनीय क्या हो सकता है मेर लिए ? वाला।

शमिष्ठा आप जय मुझे तो लगता हूँ जैसे जैसे मैं
(अचानक रक जाती है।)

ययाति जैसे क्या ? बोलो, शमिष्ठा।

शमिष्ठा आय। आप एक और विवाह क्या नहीं कर लेते ?

ययाति शमिष्ठा।

शमिष्ठा मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी बल्कि मेरा आग्रह हूँ।

ययाति नहीं।

शमिष्ठा मैं आपको वह सुख कभी नहीं द सकूँगी अब।

ययाति लेकिन क्यों ?

शमिष्ठा आपके इस नये जीवन के कारण।

ययाति नये जीवन के कारण ?

शमिष्ठा हाँ। मरी ढल रही देह के साथ आपके नये पारुष का मेल सम्भव नहीं है। आर जब ऐसा सोचती हूँ तो और अधिक अनमनी हो जाती हूँ।

ययाति गौर से उसकी ओर देखता है। अचानक परिचारिका का प्रवेश।

परिचारिका इन्द्रलोक से कोई अतिथि आय है, देवी। मिलना चाहते हैं।

ययाति इन्द्रलोक से ? कान हैं ?

परिचारिका एक स्त्री है, देव। साथ में एक अनुचर हूँ स्याद।

ययाति यही भेज दो उन्हें।

परिचारिका बाहर जाता है। ययाति आश्चर्य से शमिष्ठा की ओर देखता है।

ययाति इन्द्रलोक से कान हा सकता है ? वह भी स्त्री ? समाचार ता है कि वहाँ सब कुशल हूँ।

परिचारिका व साथ विदुमती और एव दूत का प्रवेश ।

ययाति विदुमती, तुम ।
विदुमती अभिवादन स्वीकार करें, चक्रवर्ती ।
ययाति स्वागत है, विदुमती । य महारानी शमिष्ठा ह ।

दोनों एव-दूसरे का अभिवादन करती हैं ।

ययाति यह साथ म की है ।
विदुमती रक्षक है । मरे साथ आया ह ।

रक्षक अभिवादन करता है ।

ययाति देवराज कुशल स तो हैं । कैसे आना हुआ ।

विदुमती तिर झुका रती है ।

रक्षक देवराज इन्द्र व अपनी यह क्या आप की मवा म भेजी है,
चक्रवर्ती ।

ययाति मरी सेवा म । क्या ?

रक्षक हाँ, दय । अपने जन्त पुर मे इस क्या का स्वीकार कर उह
वृत्ताथ करें ।

ययाति विदुमती की आर ध्यानपूर्वक दखता है । उस क योषा
और सो-दय ने प्रति मन-ही मन आकर्षण अनुभव करता है ।
शमिष्ठा विदुमती के पास जाती है ।

ययाति ऐकिन अचानक यह क्या ।

रक्षक पिछले युद्ध मे आप न अपन पुत्र पुर के साथ दवा की जा
सहायता की, उस स देवराज वृत्त अनुभव करत है । इस
मैत्री को दृढ करने के लिए उन्होंने यह प्रस्ताव किया ह ।

शमिष्ठा हमे देवराज का यह प्रस्ताव स्वीकार है । उहे हमारा
अभिवादन । च द्रवश देवराज की रस मैत्री का सम्मान
करता है । आजो, विदुमती ।

विदुमती को आगे बढ़कर गल लगाती है । रक्षक प्रणाम कर
मुड़ कर चला जाता है । शमिष्ठा विदुमती को लेकर घीरे-

धीरे चली जाती है। ययाति विदुमती की ओर आकर्षित अनुभव करता है।

ययाति क्या हो गया यह ! और शर्मिष्ठा ने स्वयं उसी ने विदु को स्वीकार कर लिया। कहीं मैं भी तो यही नहीं चाहता था ? रोका क्यों नहीं मैंने शर्मिष्ठा को ? क्यों विदु की ओर खिंच गया मैं भी ? उस की देह से वही गन्ध क्यों आती लगती है जो पहली बार शर्मिष्ठा की देह से आती लगी थी। कुछ समय में नहीं आ रहा। शर्मिष्ठा के साथ प्रेम के लिए लिया था यह यौवन। लेकिन जान क्या अब विचित्र-सा तनाव बना रहा हम दोनों के बीच। जैसे कोई ग्रथि है जो खुल नहीं पा रही। और अब विदु यह आकर्षण जैसे उसका अग-अग बुला रहा है मुझे। पहले भी देखा हूँ उसे— सब तो इस तरह नहीं लगा बन्नी। तो अब क्या ? इस नय यौवन के कारण ?

मच पर धीरे धीरे अँधेरा हो जाता है।

अक द्वितीय

पहला प्रवेश

मच पर हलका-सा प्रकाश हाता है। पुरु का वध। पासव स वृद्ध पुर शमिष्ठा के नय का सहारा लिये आता है। दूसर हाथ म साडी है। मगला आगर पलग को दुरस्त करती है। पुर बठ जाता है, यका हारा। शमिष्ठा अपन हो आंचल से उसका सलाट और चेहरा पोंछती है। धीरे धीरे मच पर प्रकाश फल जाना है। मगला चली जानी है।

शमिष्ठा थक गय हा ता थोडा विश्राम कर ला।
 पुर विश्राम भी वही कर सक्ता हे जो पूण रक्थ हा, सबल हो।
 मेर लिए ता विश्राम भी एक् थम है, मा।
 शमिष्ठा दह बल तो अपम बल है, पुर। आरमजल ही वास्तविक बल है।
 पुर सच, मा।

ध्या स शमिष्ठा की ओर देखता है।

शमिष्ठा हाँ, रे। और उस म तुझ से श्रेष्ठ कौन हागा।

पह धाक्य कहत हुए वह पुरु की ओर देखती है। पर उसे अपनी ओर देखता पागर आँस नहीं मिला पाती। दूसरी ओर देखने लगती है। मगला दोनों को गौर स देखती रहती है।

पुर लेकिन दहधारी के लिए देह-बल भी अनिवार्य है। बाई इतना निबल भी न हो कि कम से उचान तक भी स्वय न जा सके। कभी-कभी सोचता हूँ

शमिष्ठा गौर स उसकी आर देखती है।

शर्मिष्ठा पुरु ! कोई पदचाताप तो नहीं तुम्ह ?
 पुरु पदचाताप ?
 शर्मिष्ठा हाँ, कि अपना यौवन पिता का देकर
 पुरु माँ !
 शर्मिष्ठा तो अपनी अशक्यता को लेकर इतना दुःख क्या ?
 पुरु अपने लिए काई दुःख नहीं है, माँ !
 शर्मिष्ठा तो स्वर इतना करुण क्यों ? तुम चक्रवर्ती के उत्तराधिकारी
 हो ।

अचानक विदुमती का प्रवेश ।

विदु उत्तराधिकार में यह बुढ़ापा ही तो मिला है इमे ।
 शर्मिष्ठा विदु ! तुम !
 पुरु आप ! प्रणाम स्वीकार करें ।
 विदु किस का प्रणाम ? इस बुढ़ापे का जो चक्रवर्ती का है ?
 मैं इसका प्रणाम कैसे स्वीकार करूँ ? (अधपूर्ण दृष्टि से
 शर्मिष्ठा की ओर देखती है । शर्मिष्ठा दूसरी ओर नज़र फेर
 लेती है ।) क्यों, शर्मिष्ठा बहिन ?
 शर्मिष्ठा बुढ़ापा चक्रवर्ती का सही, पुरु तो पुत्र ही है ।
 विदु हाँ, इसी बुढ़ापे का पुत्र ।
 शर्मिष्ठा वैसे बात करती हो ?
 विदु क्यों ? तुम्ह नहीं लगता ?
 शर्मिष्ठा मुझे ? मुझे वैसे पुरु
 विदु पुरु की ही कह रही हूँ ।
 शर्मिष्ठा पुत्र ही तो है ।
 विदु हाँ, लेकिन पिता के बुढ़ापे को ढोता हुआ पुत्र ।
 शर्मिष्ठा इस से क्या ? यह तो स्वेच्छा से लिया है इसने ।
 विदु तभी तो ।
 शर्मिष्ठा तभी तो क्या ?
 विदु तभी तो देखने आयी हूँ कि चक्रवर्ती का बुढ़ापा वैसे है । मैंने
 तो यौवन ही देखा है न उन का ? (मुस्कराती है ।) बुढ़ापा
 तो तुम्हारे पास है ।
 शर्मिष्ठा विदुमती !
 विदु कुछ असत्य कह दिया मैंने ?

पुग आप दोनों ही माँ हैं मेरी ।
 शमिष्ठा हाँ ।
 पुग तो विवाद क्या है ?
 विदु यही कि यौवन की माँ बोन है और बुढ़ाप की बोन ?
 शमिष्ठा जाने क्या कह रही हो तुम ।
 विदु यही जो तुम सोचती हो, बहिन ।
 शमिष्ठा मैं ? मैं क्या मैं तो कुछ भी नहीं (अचानक विदु से
 आँसू मिलने पर चुप हो जाती है। एक पल रुक कर गीते
 धीमे बात पूरी करती है।) सोचना क्या है अब ?
 विदु सोचना तो चाहिये या चक्रवर्ती को ।
 पुग माँ ।
 विदु बहू कह कर पुकारो तो अधिक उचित नहीं होगा ?
 खिलखिला कर हँसती है ।
 शमिष्ठा विदु ! क्या हो गया है तुम्हें ?
 विदु भरा तो स्वभाव है विनोद का । तुम जानती हो ।
 शमिष्ठा लेकिन हर अवसर पर
 विदु भूल हैं न ? चक्रवर्ती ने कहा भी था
 शमिष्ठा चक्रवर्ती ने भेजा है तुम्हें ? क्यों ?
 विदु विहार-यात्रा पर जा रहे हैं हम । जाने से पूर्व
 तुम्हारा आशीर्वाद लेने ।
 शमिष्ठा आशीर्वाद ।
 विदु हाँ, मरी तो सास ने स्थान पर भी तुम्हीं हो न ?
 पुर की ओर देखती है ।
 शमिष्ठा तुम तुम मैं (पुर की ओर देखती है। उसे अपनी ओर
 देखता पाकर विदु की ओर देखती है। उससे भी आँसू गहीं
 मिला पाती । तीसरी ओर देखने लगती है।) तुम भी जाने
 क्या
 विदु मेरा तो स्वभाव ही ऐसा है। अच्छा, अब चलू। चक्रवर्ती
 प्रतीक्षा कर रहे होंगे ।
 विदु मती जाती है । पुरु और शमिष्ठा उस जाते हुए देखते
 रहते हैं । फिर दोनों एक-दूसरे की ओर देखते हैं । शमिष्ठा
 आँसू झुका लेती है । पुरु उस की ओर देखता रहता है । मच
 पर धीरे धीरे झँझरा हो जाता है ।

दूसरा प्रवेश

शमिष्ठा का भयन वन । धँधरा गा । शमिष्ठा बठी है ।
मगला का प्रवेश । धीरे धीरे प्रयास हाता है ।

मगला दूनी चर बैठी ह । प्रसाधन नही करेंगी ?
शमिष्ठा रहने दे, मगला । क्या हागा प्रसाधन का ?
मगला यह तो अत पुर की रीति है । आपकी
शमिष्ठा अत पुर । अत पुर क्या किसी भवन का नाम है ?
मगला नहीं, देवी । यह रानी का हृदय है । तभी ता
शमिष्ठा तभी ता क्या ?
मगला अत पुर म उगला ग हा तो माना जाता है कि पत्नी
शमिष्ठा पति से नही मिलना चाहती । यही न ?
मगला जी
शमिष्ठा जीर इसलिए पत्नी को चाहिए कि वह हर रात दीपक
गला कर प्रतीक्षा करती रहे । जागती रहे रात की अंतिम
घड़ी तक कि ग जाग कर पति उस की प्रतीक्षा पर अनुपह
कर द ?
मगला स्त्री ।
शमिष्ठा हर रात अभिसारिका सी गुमार कर बैठी रह वह जीर
भोर तक सेज के पुष्प अनछुए ही कुम्हला जायें । दीपक
किसी की फूँव से नही बुझे, उनका तेल भी चुक जाय ? यही
न ? यही है न अत पुर की रीति ?
मगला अपनाप क्षमा हा, देवी । एक बात कहूँ ।
शमिष्ठा तुम दामी नही हो मगला । मरी सगी हो ।
मगला यह मेरा सीमाग्य ह । किन्तु चक्रवर्ती का यह विवाह तो
शमिष्ठा मैं ही करवाया । यही, न ? तुम चक्रवर्ती को अच्छी
तरह जान गरी पायी, मगला ।
मगला वे ता आज ही भुयस पूछ रह थ
शमिष्ठा तू मिली उन स ?
मगला भोर म जब पुष्प चुनने गयी तो उद्यान म टहल ग ५ ।

गमिष्ठा इतने सवेरे गीद टूट गयी उन की ! बिदुमती भी होगी साप
ग ? यह भी बट रही थी कुछ ?

मगला नहीं । वे नहीं थी । अकेले ही ये चत्रवर्ती ।

गमिष्ठा अकेले ।

मगला मुझे भी आश्चर्य तो हुआ ।

शमिष्ठा क्या पूछ रहे थे तुम से ? क्या मेरे

मगला हाँ, आप के लिए ही यह भी कि बि आजकल रात को
अत पुर के दीपक क्यों नहीं जलाये जाते ? स्वामिनी आभा
दें ता

गमिष्ठा नहीं । मेरे कम में आने के लिए उन्हें यदि आमन्त्रण की
आवश्यकता है तो

मगला यह तो रीति है, देवी ।

शमिष्ठा दिन के समय गी आ सकते थे ?

मगला दिन के समय ?

गमिष्ठा हाँ । लेकिन वे नहीं आयेंगे । उन्हें शमिष्ठा ने गी उग की
देह से लगाव है ।

मगला देवी ।

शमिष्ठा सत्य बटु हो पर उसे समझ लेना चाहिए ।

मगला लेकिन वह भी स्वामाधिक है, देवी । आपके पति है वे ।

गमिष्ठा पति लेकिन पौरुषहीन ।

मगला क्या कह रही हैं आप ?

गमिष्ठा हाँ, मगला । वह पौरुष क्या चत्रवर्ती का है ? किस के लिए
दीपक जलाऊँ ? किसे आमन्त्रण दूँ ? अपने ही पुत्र के योधा
को कि वह आय और अपनी माँ को भोगे ?

मगला शमिष्ठा ! सती ?

गमिष्ठा मैं बूढ़ और अशक्त चत्रवर्ती की सेज पर जा सकती थी ।
उसे ही अपना प्राप्य समझ कर सत्तोष कर लेती । लेकिन
कोई धीर व्यक्तिारिणी भी अपने ही पुत्र की सेज पर नहीं
जायेगी ।

मगला तो क्या चत्रवर्ती ?

शमिष्ठा नहीं समझते इतना । वे भोग को ही प्रेम मानते हैं । उन का
भी क्या दाप ? मैं भी तो ऐसा ही मानती थी । लेकिन अब

मगला बया, दबी ?
 शमिष्ठा जन्म पुनर्युवा चक्रवर्ती न मुझे मुझे ता लगा जैसे वे बाह
 वह उद्दामता वह अकुलाहट चक्रवर्ती की नहीं है ।
 अपना भी नहीं कर सकती तुम उस दारुण वेदना की
 जब मुझे अचानक लगा कि कि यह तो मेरी ही बात म
 पला मेरे ही रक्त मांस से पुष्ट हुआ पारप ह जैसे मैं
 अपने ही पुत्र के साथ ओह पुरु

मगला शमिष्ठा ! सगी ! आह ! इतना दारुण दुःख पीती रही चुप
 चाप । पहाड़ भी टूट जाये इस बोझ म तो । (स्तब्धता ।
 मगला अपने को संभालती है ।) कुछ पल विश्राम कर लें ।
 अगन का स्मरण करें, देवी ।

शमिष्ठा को ले जा कर पलंग पर बिठा देती है । अचानक
 परिचारिका का प्रवेश ।

परिचारिका चक्रवर्ती अंध आ रहा है, देवी ।

शमिष्ठा पलंग म उठ खड़ी होती है ।

शमिष्ठा क्या ? चक्रवर्ती ! कहाँ ह ? चलो, मैं चरती हूँ ।

परिचारिका क साथ बाहर की ओर जाती है । मगला इस
 बीच साँस मज्जा ठीक करती है । शमिष्ठा क साथ यथानि
 का प्रवेश ।

यथानि यह क्या कर रहा है शमिष्ठा ?

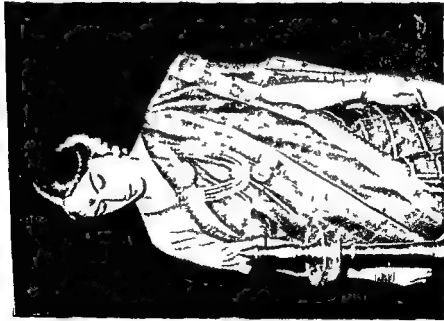
मगला का दल पर अचानक चुप हो जाता है । मगला अमि
 वाचन करती है । यथानि उस की आँखें अमिप्रायपूर्ण स्ति स
 स्तब्धता है । वह प्रणाम कर जाती जाती है ।

शमिष्ठा ममी कुछ ठीक ता है, साथ ।

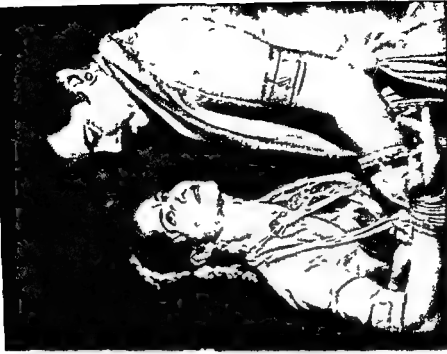
यथानि नहीं, देवी । चन्द्रिका की राजमहिषी का अंत पुर इस जेवर
 म ?

शमिष्ठा दीपक जल ता रहा है, चक्रवर्ती !

यथानि अपने भी कि ठीक न ग चलन हुआ ।



गोल्लु मल्लोत्रा शर्मिष्ठा की मुमिका से



सपना मल्लोत्रा (विद्युमती) और अरविन्द नन्दा (यशान्ति) ।



गोल्डी महोत्रा (गमिप्या) और कृष्णकुमार बालिया (पुह) ।



गोल्डी महोत्रा (गमिप्या) और अरविन्द नंदा (ययाति) ।

शर्मिष्ठा उजागे का यही ता प्रयाजन ह ।
 ययाति नही, रतना ही नही । उजाला इसलिए है कि हम उस में उजागर हो सकें । एक दूसरे के सामने अपने को गाल दे सकें । वह प्रकाश एक दूसरे के अन्तर तक पहुँच जाये । (शर्मिष्ठा सिर झुका लेती है ।) क्या हम जान सकते हैं कि विदुमती से विवाह के पश्चात इस अन्त पुर में दीपमालिका क्यों नहीं मजायी जानी ?

शर्मिष्ठा आप चक्रवर्ती विहार-यात्रा पर ।
 ययाति विहार यात्रा से लौटे पूरा मास बीत गया । छ मास पश्चात लौटे ये हम । महादेवी न पति से मिलना भी नहीं चाहा ? प्रजाजन क्या सोचते हाने ? कि सम्राट देवी शर्मिष्ठा की उपेक्षा कर रहे हैं ।

शर्मिष्ठा लेकिन
 ययाति लेकिन इस में आप किसका है ? आपके आमन्त्रण के बिना

शर्मिष्ठा अचानक उत्तजित हो जानी है ।

शर्मिष्ठा दिन के समय भी तो आ सकते थे आप ?
 ययाति लेकिन रात्रि को नहीं ? क्या ?

तीक्ष्ण दृष्टि से ययाति शर्मिष्ठा की ओर स्तब्धता है । शर्मिष्ठा उस दृष्टि को सहन नहीं कर पाती । पार्श्व की ओर देखकर जग शिमी का पुनारना चाहती है ।

ययाति हम आप में कुछ पूछ रहे हैं, देवी (कुछ स्तब्धता) हम उत्तर चाहिए ।

शर्मिष्ठा विदुमती तबत्रपू है देव । उस का अधिकार अधिक है ।

ययाति छ मास की विहार यात्रा के पश्चात कभी-कभी तुम्हारे पास आना जाना उसने अधिकार का आशय नहीं पहुँचाता ।

शर्मिष्ठा नहीं देव । यह स्त्रीत्व का अपमान होता ।

ययाति ता क्या अन्त पुर में अयोग्य कर आप हमारा सम्मान कर रही हैं ?

शर्मिष्ठा मेरा दुर्भाग्य है कि चक्रवर्ती न

ययाति बीच में ही बात काट देता है ।

ययाति विदुमती का स्वीकार कर लिया ?
शर्मिष्ठा नहीं, स्वामी । अथवा न ले । यह मरा मरण होगा ।

कुछ दूर चुप ।

ययाति हम तुम्हारे बिना नहीं रह सकते, शर्मिष्ठा ।
शर्मिष्ठा लेकिन विदुमती
ययाति नहीं । शर्मिष्ठा का स्थान कोई नहीं ले सकता । विदु ने
हमारे यौवन का तुष्ट किया है, लेकिन तुम्हारे बिना कहीं
शांति नहीं है, शर्मिष्ठा ।
शर्मिष्ठा भाग में शांति कहीं नहीं है येव ।
ययाति यह दो आमाओ का मिलन है, भाग नहीं ।

शर्मिष्ठा को अपनी बाहों में लेने का प्रयत्न करता है ।
शर्मिष्ठा छिन्ककर दूर खड़ी हो जाती है ।

शर्मिष्ठा नहीं आय । मुझे क्षमा कर ।
ययाति शर्मिष्ठा ! यह हमारा तिरस्कार है ।
शर्मिष्ठा नहीं, दया ! यह मरा अधिकार है ।
ययाति अधिकार ? पति के तिरस्कार का अधिकार ?
शर्मिष्ठा यह आपका तिरस्कार नहीं, मेरी विवशता है, चञ्चर्वती ।
आप का यौवन आप का पीछा मैं सहन नहीं कर पाती ।

ययाति कुछ पन उस की ओर देखता है ।

ययाति तुम कहीं डाह से जल तो नहीं रही हो, शर्मिष्ठा ?
शर्मिष्ठा डाह ? डाह किससे ?
ययाति मुझसे विदुमती से । हमें अपनी देह की सीमा स्वीकार
करनी चाहिए, शर्मिष्ठा ।
शर्मिष्ठा देह की सीमा । (व्यग्न से मुस्कराती है ।) वही तो कर
रही हूँ, चञ्चर्वती ।

शर्मिष्ठा अपने-आपके को ओर देखते सजे रहते हैं । मर पर धारे
धीरे धीरे ला जाता है ।

अक तीसरा

पहला प्रवेश

मच पर धीरे धीरे प्रकाश होता है। पलंग पर ययाति और विदुमती सोये हैं। विदुमती उठ कर बातायन खोलने का अभिनय करती है। अँगड़ाई लेती है। ययाति पलंग पर अध-लेटा-आ हो कर यह सब देखता रहता है। विदुमती उभ अपनी ओर देखते पाकर मुस्कराती है।

- विदु यया सोच रहे ह ?
- ययाति हर प्रमात तुम्हारा यौवन का नित-नूतन करता जाता है, विदु ! तुम्हारा सौन्दर्य और गिल उठता है। यह यौवन, यह सौन्दर्य कभी न रहगा तब ?
- विदु निश्चिन्त रह, चक्रवर्ती ! मैं दवयोनि हूँ। हम चिरयुवा हात है। मत्स्यगेय के प्राणी निरन्तर युगाप की ओर बढ़ते ह ययाकि उह मरना हाता है। हमारा यौवन निरन्तर नित नूतन होता जाता ह—दवत्व के चरम गिलर की ओर। केकिन आप दवयोनि नही है।
- ययाति जानता हूँ। एक दिन मैं फिर वृद्ध हा जाऊँगा। वृद्ध और अज्ञान ! और तुम एसी ही बनी रहागी चिरयुवा चिरमुन्दर !
- विदु प्रवृत्ति का यही विधान ह।
- ययाति और और एक दिन मैं नही रहूँगा। तब भी तुम इमी तरह
- विदु मुचे तो इन्द्रलोक लीगा है। मत्स्यलाक हमारा स्थायी आयाम नही हा मकता।
- ययाति विवाह को जन्म जन्मांतरों का सम्बन्ध नहा गया है।

विदुमती सिलसिला कर हँसती ह।

विदुः मन न भरा हा ता अगळे जम म फिर लोट आऊं आप बे पास ? तब तत्त्व प्रतीक्षा कर लूंगी मैं ।
 ययाति ठिठोली कर रही हा मेरी ?

विदुः अचानक गम्भीर हो जाती ह ।

विदुः नहीं, चन्चलता । भर जीवन का सत्य यही ह । (अचानक स्वर बल्लर) मैं द्रव्योनि हूँ । एक ही वस की कई पीढ़ियों स सम्बन्ध रख सकती हूँ ।

ययाति यह पाप है ।

विदुः मृत्युलोक में । हम व्यक्ति का नहीं पौरुष का भागती है । पौरुष सनातन तत्त्व ह व्यक्ति म उसकी आसक्ति क्षमि व्यक्ति है बेवक्त । प्रत्येक नारी सनातन कामना और पुरुष उसी सनातन पौरुष का माध्यम है ।

ययाति कामपणा पाप नहीं है तब ?

विदुः नहीं । वह सनातन ह, धर्म ह ।

ययाति उठ कर आतिथ्यन के लिए गौह फँलाता ह ।

ययाति आओ, सनातन नारि । लो, मुझे अपने से समेट लो । न छोड़ो मुझे । एक पल के लिए भी नहीं । प्रिये ! विदुः । इतनी उद्दामता इतना पौरुष तुम न होती तो अब समझा देवराज न तुम्हें क्यों भेजा भर पास । अथवा विश्व की समस्त नारियाँ मिलकर भी इस पौरुष का बेग नहीं सह सकती थी । ओह ! शर्मिष्ठा सायद ठीक कहती थी

विदुः गया कहती थी शर्मिष्ठा देवी ? आप उधर गय ये ?

ययाति हा, गया था कुछ दिन पूर्व । रहा नहीं गया ।

विदुः गया कहती थी ?

ययाति कि वह मेरे पौरुष को सहन नहीं कर पायगी ।

विदुः तो उन्होंने आप को स्वीकार नहीं किया ?

ययाति विदुमनी ।

विदुः यग्य नहीं कर रही, देव । केवल जानना चाहती थी ।

ययाति हा । मर आग्रह उन्हें स्वीकार नहीं हुआ । मैंने तो समझा कि उन्हें ईर्ष्या हो गयी है ।

विदुः इर्ष्या ?
 ययाति हौ, मुझ से, तुम स ।
 विदुः नहीं, चक्रवर्ती । शर्मिष्ठा देवी इन वृत्तिया से ऊपर है ।
 ययाति देव को उन से अधिक किसी ने प्यार नहीं किया ।
 ययाति तुम भी ऐसा समझती हो ?
 विदुः निस्सन्देह ।
 ययाति तुम ने भी नहीं ।
 विदुः हम केवल रमण करती है, प्रेम नहीं ।
 ययाति विदुः ।
 विदुः कटु सत्य कहने के लिए क्षमा करेंगे, देव ।
 ययाति नहीं, यह सत्य नहीं है । तुम विनोद कर रही हो । लेकिन
 तुम्हारे इस कथन से मुझे कितनी पीडा पहुँची है, जानती
 हूँ ।
 विदुः नहीं, राजन् । आपका पीडा देना मेरा अभीष्ट नहीं है ।
 ययाति फिर ऐसा क्या कहती हो ?
 विदुः क्योंकि यही सत्य है ।
 ययाति यह सत्य मेरे हृदय को चीर दगा ।
 विदुः सत्य सदैव घुम होता है ।
 ययाति यह सत्य भी ?
 विदुः हाँ, यह भी । पीडा आपके दृष्टिबाण की है ।
 ययाति नहीं, विदुः । मुझे दशन में मत उलझाओ । मैं तुम्हारे प्रेम
 का
 विदुः क्षमा करें, देव । आप केवल मर जीवन के, मेरी देह के
 प्यासे ह । प्रेम देवी शर्मिष्ठा के पास है ।
 ययाति तो वह मुझे स्वीकार क्या नहीं करती ?
 विदुः आपने उनसे प्रेम माया ही कब ? आप तो सदैव देह की ही
 माँग करते रहे ।
 ययाति मरा अधिवाह है यह । मैं उसका पति हूँ ।
 विदुः अधिवाह की माया लालसा की होती है, प्रेम की नहीं ।
 ययाति लालसा भी हो तो क्या अनुचित है ? वह मरी-
 पत्नी है । यही न ? (मुस्कराती है ।)
 ययाति निस्सन्देह । उस की देह मेरी है ।
 विदुः आप भूलते है, चक्रवर्ती । अपन पुत्र की सेज पर जाने की
 भाग्ना नोई भी मैं मृत्यु का वरण करना पसन्द करणी ।

- ययाति मैं शमिष्ठा का पति हूँ ।
विन्दु लेकिन आप का यह यौवन, यह पौरुष देवी शमिष्ठा का पुत्र है ।
- ययाति विन्दुमती ।
विन्दु शुभाचाय का दाप छाटा रना आप देने स भी भारी पडा ह, चत्रवर्ती । सारा त्रम उछ गया ।
- ययाति त्रम ? कैसा त्रम ?
विन्दु मानवी सृष्टि का त्रम ।
- ययाति मैं समझा नहीं ।
विन्दु समझ लेन तो इस दुष्चन स मुक्त न हा जात ?
- ययाति दुष्चन ।
विन्दु विधान यही ह कि पुत्र स पिता का ही ज म होता है । लेकिन आप स पुरु का पुनजम हुआ है ।
- ययाति पुरु का पुनजम ? पहिलियाँ मन बुझाआ । तुम कहना क्या चाहती हो ?
विन्दु मही कि आप के इस पौरुष न शमिष्ठा की दह स जम लिया है । शमिष्ठा देवी अपने ही पुत्र के पौरुष को भोगना कैसे स्वीकार करती ?
- ययाति तुम विनिप्त हो गयी हा, विन्दुमती ।
विन्दु अनुकूल न हा ता सम्पूर्ण सृष्टि विनिप्त लगन लगती है । लागो न सूर्य चन्द्र को, ईश्वर तब को विनिप्त कहा है ।
- ययाति मैंने उधार लिया ह पुरु का यौवन । अन्य सभी कुछ तो मेरा ही ह । यह दह, ये इन्द्रिया सब मेरी ही ता ह ।
विन्दु इस दह का बल, इस का लावण्य पुरु का है । ■ यथा इस देह स रता ही क्या हे ?
- ययाति किंतु वह मैं उस लाटा दगा ।
विन्दु तब ?
- ययाति समय आन पर ।
विन्दु तब वह कैसे भी वृद्ध हो रहा होगा । जा यौवन उस न आप को दिया है, वह अक्षय नहीं है ।
- ययाति तुम कहना क्या चाहती हो ?
विन्दु अच्छा । त्रम बीच यदि उस की प्राणशक्ति चुक जाय ता ?
ययाति किस की ?

विदुः उस बुढाप की जा वह अपने पर ढो रहा ह ।
 ययाति नहीं ।
 विदुः तो वह मृत्यु किस की हागी ?
 ययाति मृत्यु ?
 विदुः ययाति की या पुरु की ? (स्तब्धता) मौन क्या हा गये,
 चञ्चवर्ती ? बतायें, किस की मृत्यु होगी वह ?
 ययाति कुछ समझ म नहीं आ रहा ।
 विदुः ययाकि आप समझना चाहत नहीं ।
 ययाति मैं नहीं समझना चाहता ?
 विदुः हाँ । यह देह अब पुरु की है ।
 ययाति नहीं, विदुः । मैं ययाति ही हूँ । मेरी मुखावृति, इस देह की
 गठन—सब ययाति का है ।
 विदुः यह सभी परिवर्तनशील ह । यह मुखावृति बालपन म क्या
 ऐसी ही थी । देह के कोप निरन्तर परिवर्तनशील हैं और
 ययाति और क्या ? चुप क्या हो गयी ।
 विदुः और इस देह म यह परिवर्तन पुरु के जीवन से हा रहा है
 उस बुढाप से नहीं जो ययाति का है ।
 ययाति लेकिन मैं ययाति हूँ । इसी नाम से जानते ह मुझे सब ।
 विदुः वह एब नाम है । जब चाह उस मे परिवर्तन कर सकते है ।
 ययाति लेकिन मेरी आत्मा ?
 विदुः उसका कोई नाम नहीं हाता । वह न पति हाती है, न पुत्र ।
 पिछले जन्म मे यह आत्मा क्या ययाति कहलाती थी ?
 ययाति तुम उलझा रही हो ।
 विदुः नहीं, सीधी बात है । ययाति किसी आत्मा का नहीं, देह का
 नाम है, और उस देह का सब कुछ अब पुरु का है ।
 अथवा (अचानक चुप हो जाती है ।)
 ययाति अथवा क्या ।
 विदुः कुछ नहीं ।
 ययाति नहीं, कुछ मत छुपाओ जब इतना कहा है तो ।
 विदुः अथवा मुझे भी आपके साथ रहना क्यों स्वीकार होता ?
 ययाति नहीं, विदुः । नहीं ।
 विदुः (कुछ चुप रहकर) सत्य अनुब्रूल न हो तो बटु लगता है—
 लेकिन इस से वह असत्य नहीं हो जाता ।
 ययाति तो मुझे क्यों स्वीकार किया तुम ने ? क्या विवशता थी ? तुम
 देवराज की पुत्री थी, अप्सरा नहीं ।

विन्दु मैं पुर पर आसक्त थी ।
 ययाति विन्दुमती ।
 विन्दु यही सत्य है, चन्द्रवर्ती ।
 ययाति ता तो मेरे साथ ?
 विन्दु क्याकि यह यौवन पुर का था जिस पर मैं आसक्त थी ।
 ययाति लेकिन देवराज
 विन्दु वे जाते थे मेरी आसक्ति के सम्बन्ध में ।
 ययाति तो भी उहान मेरे पास भेजा तुम्ह ?
 विन्दु भेजा था पुर के लिए । मैंने ही कहा था उन से । लेकिन
 ययाति लेकिन क्या ?
 विन्दु तब तब उस का यौवन आप के पास आ गया था ।
 ययाति मैं पिता हूँ उसका ।
 विन्दु आपका बुढापा उस के यौवन का पिता है ।
 ययाति विन्दु तुम पुर पर आसक्त थी ।
 विन्दु उस के पौरुष पर तज पर, यौवन पर । और यह सब उसी
 देह में था जिसे आप ययाति कह रहे हैं । लेकिन (घुप हो
 जाती है ।)
 ययाति लेकिन क्या ?
 विन्दु लेकिन पुर भी तो नहीं मिला इस सब में ।
 ययाति विन्दु !
 विन्दु हाँ, इस पारंग, इस यावत, इस तन में भी बाहर रह जाता
 था कुछ जो मेरी बाहों में नहीं सिमट पाता था मानो । यह
 सब पुरुष का था—पुर नहीं था लेकिन ।
 ययाति मुझ में पुरुष का तलाश करती रही तुम ।
 विन्दु आप में नहीं, इस यावन में । मैंने समझा था—यही ता है पुरुष
 जिस मुझे पाना है । मेरा भ्रम था लेकिन । यह सब पुरुष का
 था, पुरुष नहीं था लेकिन । उस नहीं था सबी मैं । (ययाति
 देखता रहता है ।) समय आ गया है मुझे अब छोड़ जाना
 चाहिए । (ययाति चौकता है ।)
 ययाति नहीं ।
 विन्दु इन्द्रलोक । पर मेरे उदर में जो बीज पल रहा है उस किसका
 नाम दूगी मैं ।
 ययाति ओह ! यह क्या किया तुम ने वसा जप यह श्रम अपना
 मुझ के लिए पुरुष की आसक्ति में मेरे साथ

विदु आपन भी क्या इसीलिए नहीं लिया था पुरुष का यावन ?

विदु चली जाती है । ययाति उसे जाते हुए देखता है ।
फिर सिर झुका कर बठ जाता है । कुछ पल की चुप्पी ।
फिर सिर उठाता है ।

ययाति यह क्या कर बैठा मैं ? पुरुष पर आसक्त थी वह और मेर
साथ मैं पुरुष शमिष्ठा, कितना सहा है तुमने ! मैं ने क्या
नहीं समझा यह सब ? लेकिन मैं तो प्रेम चाहता था,
निश्छाय प्रेम—वह मेर भाग्य मे नहीं ह स्थात् । कहीं कब,
कहीं देवयानी, और अब अपना ही अश पुरुष कहीं मुक्ति
नहीं । सब कुछ ले ला मुझ से । सब कुछ । छाड़ दूंगा मैं यह
अश्रुवर्षित्व—वस एक पल निश्छाय, मुक्त प्रेम एक
पल

मच पर धीरे धीरे अँधरा हो जाता है ।

दूसरा प्रयोग

पलंग पर पुर अधलेटा है। एक बान म किसी चीज को दस कर उठान के लिए बिना लाठी उठ कर जाने की कोशिश करता है। हाँफ जाता है। बीच में ही सोट कर पलंग की पाटी पर बठ जाता है। इसी बीच शमिष्ठा आती है और दोड़कर उसे सँभालती है। उस के लसाट पर से पसीना पोंछती है।

पुर इसीलिए कहता हूँ कि दुबलता अभिगाप ह। कभी कभी मोचना हूँ (अचानक चुप हो जाता है।)

शमिष्ठा क्या सोचते हो पुर ?

पुर यही कि कि यदि क्षाप लौटान की विधि न बतायी जाती तुम ने तो चक्करी कैसे सहन करते यह सब। वे तो बहुत अधीर है

शमिष्ठा और आत्मकेन्द्रित भी।

पुर क्या कह रही हो ? नहीं, यह तुम्हें सोमा नहीं बता।

शमिष्ठा अपमानित नहीं कर रही वह, पर सच यही है।

चुप हो जाती है।

पुर माँ, मरी ओर देरों, माँ ! (शमिष्ठा उसकी ओर दलती है।)

एक बात पूछूँ ? सच सच कहोगी न ?

शमिष्ठा ऐसी भी क्या बात ह ? बाला।

पुर बहूँगा। पर उस म पहले तुम्हें क्षपण लनी होगी।

शमिष्ठा क्षपण कैसी ?

पुर मरी क्षपण कि तुम कुछ छुपाओगी नहीं।

शमिष्ठा ऐसा भी क्या प्रश्न है तरा ?

पुर है, माँ ! वह मेरे अस्तित्व का प्रश्न है।

शमिष्ठा तुम्हारे अस्तित्व का ? ऐसी क्या बात है ? बाला।

पुर क्षपण ऐसी हो न ?

शर्मिष्ठा हाँ, हाँ। कुछ बालो ता सही अब।
 पुरु चक्रवर्ती से अलग क्या रहन लगी तुम ?
 शर्मिष्ठा यह तुम्हारे अस्तित्व का प्रश्न कैसे हा गया पुरु ? यह प्रश्न
 क्या तुम्हें पूछना चाहिए ?
 पुरु मेरी दृष्टि में यह मेरे अस्तित्व का ही प्रश्न है।
 शर्मिष्ठा कैसे ? यह प्रश्न तुम्हारी मर्यादा के बाहर है। मैं इसका उत्तर
 देने का वाध्य नहीं हूँ।
 पुरु मुझ पर विश्वास नहीं है, मा ?
 शर्मिष्ठा बात विश्वास-अविश्वास की नहीं, मर्यादा की है।
 पुरु वही तो मैं कह रहा हूँ। तुम क्या मुझ से मर्यादाहीन आचरण
 की अपेक्षा कर सकती हो ?
 शर्मिष्ठा इसीलिए मुझे आश्चर्य है, पुरु। यह बात तुम्हारे मन में
 उठी ही क्या ?
 पुरु मेरा प्रश्न निरूपण ठीक नहीं रहा, माँ। मेरा मतलब था
 कि
 शर्मिष्ठा नहीं। हम दाना के बीच आकने की तुम्हारी इच्छा अनुचित
 है।
 पुरु दोष न लगाओ, माँ। मेरा प्रश्न केवल भ्रमसे सम्बन्धित था।
 शर्मिष्ठा तुम्हारा इससे क्या सम्बन्ध ?
 पुरु वही तो जानना चाहता था मैं। वही इसका कारण यह था
 नहीं कि (चुप हो जाता है।)
 शर्मिष्ठा क्या ?
 पुरु सम्भव है तुम्हें चक्रवर्ती की यह बात सहन न हुई हो—
 शर्मिष्ठा कौन-सी बात ? विदुमती ?
 पुरु नहीं।
 शर्मिष्ठा तो ?
 पुरु कि उन्होंने जिस का यावन लिया वह तुम्हारा ही पुत्र है।
 शर्मिष्ठा पुरु।
 पुरु तुमने मेरी शपथ ली है, मा।
 शर्मिष्ठा मैंने कहा था मैं चक्रवर्ती-आत्मवेदित है।
 पुरु वह तो तुम पहले भी जानती थी। लेकिन अब तुम उन्हें
 सहन नहीं कर सकती न ? मेरा यौवन लेने के
 शर्मिष्ठा अचानक उत्तर्जित हो जाती है।

शर्मिष्ठा बोई माँ नहीं सह सकती यह ।

पुर बीच में ही बात फाटता हुआ साठो का सहारा त पर
गलग से उठ सड़ा होता है ।

पुर बोई पुत्र भी सहन नहीं कर सकता यह ।
शर्मिष्ठा निःसादह ।

गुरु तो मुझे मगना व मरास छाड़ दा, माँ ! अब से तुम मरी
परिचर्या नहीं करोगी ।

शर्मिष्ठा क्या ? इस अमागिन माँ को यह दह क्यों, पुर ?
पुर अमागा वह पुत्र है जो माँ से परिचर्या करवाता है ।

शर्मिष्ठा लबिन पुत्र यन्नि दुबरा हो
पुर वृद्ध हा ?

शर्मिष्ठा तभी ता ।

पुर और वह भुवापा अपन ही पति का हो ।
शर्मिष्ठा पुर ।

पुर क्षमा करो, माँ । जा भी हूँ तुम्हारा पुत्र ही रहूँगा ।

शर्मिष्ठा मैं न कर

गुरु तुम्हारी परिचर्या में वात्सल्य नहीं है, माँ । एक लगाव है जो
अमहाय और वृद्ध पति के लिए होता है । तुम्हें लगता है कि
यह भुवापा चक्रवर्ती का है इसलिए तुम्हें इसकी सेवा करना
चाहिए । नहीं माँ तुम्हें चक्रवर्ती के साथ होना चाहिए ।
ययानि का प्रवेश ।

ययानि इसीलिए तो ययाति आया है यहाँ ।

गद्य आश्चर्यचकित हो जाते हैं । अतः शर्मिष्ठा मौन मग
करती है ।

शर्मिष्ठा चक्रवर्ती ! आप यहाँ ।

ययानि हाँ शर्मिष्ठा ! (ययाति का स्वर अत्यन्त कामल है ।)

शर्मिष्ठा लबिन आप तो यात्रा पर जाने वाले थे ? बिदुमती

ययानि चली गई अपनी यात्रा पर । हमारी यात्रा तुम्हारे साथ
होगी ।

शर्मिष्ठा मेरे साथ ।

ययानि क्यों ? हम तुम्हारे सहयात्री होने के योग्य नहीं ?

शर्मिष्ठा क्या कहते हैं, देव ? लेकिन यहाँ पुर

पुरु बीच में ही बात फाट देता है ।

पुरु पुरु की देख-माल मगला कर लेगी । तुम्ह चक्रवर्ती के साथ जाना चाहिए, मा ।

ययाति पुरु को तो स्वयं सारे राज्य की देख-माल करनी है ।

पुरु मुझे ? लेकिन

ययाति हाँ, पुरु ! हमें इस ऋण से भी मुक्त करदो अब ।

पुरु लेकिन, चक्रवर्ती

ययाति अब हम नहीं, तुम चक्रवर्ती हो ।

पुरु नहीं । मुझ से नहीं हो सकेगा यह ।

ययाति यह राजाज्ञा है, पुरु ! पिता का आदेश भी ।

शर्मिष्ठा पुरु ठीक कहता है, आय ! ऐसी अवस्था में

ययाति यह अवस्था तो हमारी है, शर्मिष्ठा ! हम अपना बुढ़ापा लूने आये हैं—पुरु को उसका यौवन लौटा देने ।

सब कुछ देर चुप रह जाते हैं ।

शर्मिष्ठा अकस्मात् यह

ययाति बहुत सोच विचार कर निष्पत्ति लिया है यह ।

पुरु किन्तु इतनी त्वरा यया ? अभी तो एक वर्ष भी नहीं हुआ ।

ययाति अपनी नियति से पलायन कायरता है । ययाति जो कुछ हो, कायर नहीं है । यह बुढ़ापा मेरी नियति है तो मैं ही इसे वहन भी करूँगा ।

पुरु अचानक मुह फर फर चित्लाता है ।

पुरु नहीं, यह नहीं होगा अब ? यह यौवन चक्रवर्ती ही रहें । मैं बुढ़ापे से सन्तुष्ट हूँ ।

ययाति लेकिन क्यों ?

पुरु मैंने अपना यौवन देकर यह बुढ़ापा लिया है । इस मैं नहीं लौटाऊँगा ।

शर्मिष्ठा पुरु !

ययाति बुढ़ापे से इतनी आत्मिक ?

शर्मिष्ठा बोलो, पुरु !

पुरु चुप रहता है

ययाति ऐसी भी क्या विवशता है तुम्हारी ?

- पुरु मैं म मर नहीं मरूँगा उस जीवन का। यह मर लिए नहीं है अब।
- ययाति किम के लिए है ?
- पुरु आपने लिए।
- शर्मिष्ठा अपना वो सेभाला पुरु। तुम चक्रवर्ती के सामन लड़े हो।
- ययाति नहीं, वह तन दा उम। उसका राय स्वभाविक है।
- पुरु यह रोप नहीं है, चक्रवर्ती। मेरी विनयता ?
- शर्मिष्ठा विनयता कैसी ?
- ययाति वही तो जाना चाहत है हम।
- पुरु क्या ? क्या जाना चाहत है आप ? मरा जीवन आप का है। मुझे नहीं पता है उम। यह क्या पयाप्त नहीं है ?
- ययाति अपना पुत्र पर दान भी अधिकार नहीं हम ?
- पुरु पुत्र की हर बात क्या पिता का जाननी ही चाहिए ?
- ययाति यह तुम्हारी निजी बात नहीं है। हम से हमारा सम्बन्ध है। हमारी भी नियति जुड़ी है इस से।
- पुरु चक्रवर्ती।
- ययाति यह चक्रवर्ती ययाति नहीं, तुम्हारा पिता कह रहा है। उस अपना युद्धापा क्या नहीं मिल सकता ?
- पुरु पुत्र के जीवन से विनियम जो हो गया है उसका।
- ययाति ऐकिन हम उम जीवन का सह्य लौटा देना चाहत है।
- पुरु आप भूल रहे हैं कि यह जीवन अब वही नहीं है।
- ययाति क्या ?
- पुरु आप ने सोचा है इस मेरे लिए त्याग्य है यह।
- ययाति पुरु ?
- पुरु कोई पुत्र उस जीवन को स्वीकार नहीं कर सकेगा जिस न उमकी मा का
- शर्मिष्ठा मर्यादा म रहा, पुरु।
- पुरु वही तो कर रहा हूँ मैं। मर्यादा की ही तो बात है।
- ययाति यह जीवन तुम्हारा ही है पुरु। मुझ पर तो नृण था।
- पुरु जीवन कोई वस्त्र नहीं है चक्रवर्ती। वह एक अनुभव है। मरे लिए अब वह अनुभव एक स्मृति होगा—एक अमरनीय स्मृति। मेरी चेतना उस बात का नहीं श्लेष पायेगी—दूट जायगी।

कुछ पलों का मौन ।

ययाति हम तुम से सहानुभूति है, पुरु । लेकिन हर किसी को अपनी नियति से स्वयं ही साक्षात्कार बनना होता है । मैं उस से आतंकित जितना भागता रहा, वह काल छाया सी मुझे ग्रसती ही गयी । अब उस के समक्ष गड़ा हो गया हूँ ता लगता है मुक्त हो गया हूँ—निश्छाय ।

पुरु लेकिन मैं
ययाति तुम्हारी बेदना को समझ सकता हूँ । लेकिन उम में भागा भत, उस से साक्षात्कार करा । उमी भ मुक्ति है ।

पुरु किंतु
ययाति जानता हूँ, यह नियति भरे कारण है । लेकिन मैं पिता हूँ, इतिहास हूँ तुम्हारा । तुम न इतिहास के दायित्व का सम्भाला है तो उस के परिणामा से कैसे बचोग ?

पुरु नहीं, चक्रवर्ती ।
ययाति निम्नय यही हुआ था, पुरु, कि मैं जब चाहूँ तुम्हारा जीवन लौटा सकता हूँ । यह लो, मैं तुम्हारा यौवन लौटाता हूँ ।

अपना मुकुट उतार कर पुरु के मस्तक पर रख देता है ।

पुरु नहीं, नहीं तात । मुमसे नहीं हागा आह जात मत्ताप के इस नरक में

धीरे-धीरे पुरु युवावस्था में जाता दीखता है । लेकिन उस के चेहरे पर पीड़ा का भाव बहुत स्पष्ट है । ययाति वृद्ध होता जा रहा है । पुरु के हाथ से लाठी लेता है । शमिष्ठा आगे बढ़ कर उसे सहारा देती है । दृश्य निश्चल हो जाता है । भव पर जँपरा हो जाता है ।

●

विगमिद्वम् यक्षम्

किमिदम यक्षम का प्रथम मंचन रंगम नाट्यदल द्वारा 13 सितम्बर'85
को बीकानेर में हुआ ।

निर्देशन कलाश भारद्वाज

पात्र

धाय	रूपा पारीक
प्रोफेसर	राकेश भूषा
माँ युवती व गूगी-बहरी लडकी	नीलम शर्मा
अपनी लडकी	शीलम शर्मा
नवागंतुक	शरद सबसेना
युवक	सतीश शर्मा
भूतिवार	प्रह्लाद राय
लडका	निधिर फरियन टिक्का

एक जटिल नाट्यानुभव

क्रिमिदम पक्षम का वाचन जब न-दक्खिण जी १ पहली बार रंगन के सभी मित्रा १ सम्मुख किया तो नाटक के गहरे अर्थों के अधिक स्पष्ट न हान के कारण एक जटिल संरचना का अनुभव वाचन के दौरान बार-बार होता रहा। वाचन के दौरान कुछ दृश्य जैसे लिगते गये घाय का लगातार देखत रहना गूगो-वहरी रटनी का दर्द भरा रहना यण्डहर म प्रोफेसर की माना अपने को ही गोजतो केनैन जीवों कुछ धुधला, कुछ स्पष्ट झिलमिलाता गया—एक दूजे में घुला मिठा। वाचन समाप्त हुआ—बची रही ये सब तम्बीरें और एक बेचनी। नाटक का फिर फिर पढ़ा—साधिया के संग और अलग म भी—और रंग करने की बेचनी बढ़ती गयी।

लेकिन धाय ? इस जटिल चरित्र को निभान के लिए अभिनेत्री की तलाश शुरू हुई तो लगा कि यह नाटक हम स नहीं हा सकेगा—धीकार में बाई अभिनेत्री नहीं दिया जा इस भूमिका के साथ याय कर पाती। फिर भी एक जिद कि पहली प्रस्तुति रंगन ही करेगा और नाटकार भी इस जिद के आगे लाजवाय। सारे प्रयत्न के बाद नाटक एक असं तब पढ़ा रहा। एक दिन अचानक रूपा पारीक म बात हुई, उन न नाटक पढ़ा। फिर गय के माय बंठार वाचन हुआ। लगा कि हो सक्ता है।

पहली बार नाटक जब सुना तब साथ ही-साथ एक बड़े मंच पर उसे हाते हुए भी दंग रहा था। रेलवे प्रेक्षागृह ही इस आवश्यकता की कुछ पूर्ति कर सक्ता था। उमी का ध्यान में रखकर मंचन की तैयारी की गयी। मंच को तीन भागों में बांटा। दर्शकों की दृष्टि से बायें यण्डहर मध्य और दाहिनी ओर घर का भाग। तीनों भागों पर प्लेटफार्म का उपयोग कर अलग अलग स्तर बनाये गये। मंच पर 'यूनतम वस्तुओं का उपयोग किया गया ताकि एक सूत्रपत्र और रहस्यमयता का वातावरण बराबर बना रहे।

वाचन और पूर्वाभ्यास चलता रहा। नाटक की जटिल संरचना अधिकाधिक चुनौतीपूर्ण होती गयी। अथ के कई स्तर एक साथ झिलमिलान लगे—फंटेमों आर यथाय एक साथ रूपायित वैसे हा। इस बीच मैं खुद

या अन्तर स कमजोर होत दगा, लेकिन अभिनताआ और अथ सहकर्मियो की लगन से विश्वास हा बल मिला ।

जानना मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है और जानने का सर्वोच्च लक्ष्य है खुद का जानना । लेकिन खुद को जानने के क्या धानी हैं ? क्या अपन इतिहास को, अतीत को जानना ही सुद का जानना है ? इतिहास है क्या ? जानना तो मुक्ति है—पर इतिहास क्या अभी मुक्त करता है ? या कि अपन का जानना अपने होने का बोध है और इतिहास वह अभिशाप है जो इस बोध को होने नहीं देता ? मिमिदम याम को बे-द्रीम समस्या आखिर क्या है ?

बचपन से ही घर से भागा प्रोफेसर (पुरातत्ववेत्ता) इस सवाल का लेकर परेशान है कि उसका इतिहास क्या है ? अपने पिता को अपने इतिहास के मूल की खोज जारी रखने के लिए हो वह बीस साल बाद घर लौट आता है । घर आम पर माँ की जगह धाय है । वह मान, कुछ बताती ही नहीं—रहस्यमयी-सी धाय जो लगातार देपती आ रही है—सायद देरती रहेगी भी । इस रहस्य को और गहरा और तकलीफदेह बनाती है गूगी-बहरा लडकी । 'यह तुम्हारी बहिन है, धाय कहती है । परेशान प्रोफेसर चारपाई पर बैठ जाता है ये शब्द सुन कर । बचपन में मा से किया प्रश्न बोध जाता है—मेरे पिता कहाँ है ? यहाँ से शुरू होता है नाटक का पहला फ़ैस बैक । स्थिर बैठा अपलक ताकता प्राफेसर बीस साल पीछे पहुँच जाता है लडक का प्रश्न, 'माँ ! मेरे बापू कहाँ है ?' 'मंदिर नहीं गया आज तू ?'—प्रश्न के उत्तर में प्रश्न ! क्या प्राफेसर का उत्तर मिल गया ? यह नाटक की भाषा का ही कमाल है कि माधारेण शब्दों और सहज बोलचाल के माध्यम विन्यास में गहरे दार्शनिक अर्थ चलनते रहते हैं । इस दृश्य में प्रोफेसर साक्षात् भाव में अपने अतीत को देरता है, घटनाएँ उसके हृदय में घटती हैं, लेकिन दूसरे अभिनताआ के लिए उस की उपस्थिति का कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया था ।

लण्डहोरा में प्राफेसर का एक मूल मिलता है पत्थर की मूर्ति, एक युवा स्त्री पर युवा एक वृद्ध पुरुष—दाना साप की कुण्डली में बंद । साप की पुनार और प्रोफेसर का बदहवास भागना । यह साँप क्या है ? मन का भ्रम या भय ? वासना या शैतान या रक्षक ? जिस सम्पदा का रक्षक ? क्या उस का दूसरा क लिए जानना आवश्यक नहीं ? पूरा नाटक फँटसी और यथार्थ तथा अतीत और वर्तमान के ताने-बान की जटिल बुनावट में बुना हुआ है ।

पलेश बक व दृश्य हल्का नीला प्रकाश लिए हुए शुरू होते । उसी में साधारण प्रकाश मिला दिया जाता । यह व्यवस्था सभी दृश्या म थी । नाटक म सभी दृश्य शीघ्रता स आगे उदित—फिर अतीत म लौटते । लेकिन इन सब म मूर्तिवार का दृश्य बबल चौथाई मिनट का था पर प्रस्तुति की दृष्टि स चुनौती भरा क्याकि नाटक यहाँ चरम सीमा की आर अग्रसर ह । अगर यह दृश्य हल्का होता है तो पूर नाटक के प्रभाव का हल्का कर देता ह । इसीलिए जम ही धाय अँधेर मच की जोर देगना शुरू करती ह कि छैनी की ठक ठक शुरू होती ह—प्रकाश—युवक युवती की दास्तचीत—ठक ठक धीरे धीरे बढ़ती जाती ह—अचानक मूर्तिवार का प्रवेश—चाबू का धार—चीख के साथ युवक का गिरना—प्राज्ञ की आवाज—ठक ठक यद-तबला शुरू तेजी स आर मूर्तिवार का अपनी ही पुनी का दबोचना । दृश्य म चाबू स धार के साथ ही प्रकाश क्षटके में घीमा हाता ह और जैस ही मूर्तिवार युवती की दबोचना ह वम ही फेड आउट । जँधरे म बचाव का सघष—तपला बंद । सितार की दद भरी आवाज के साथ-साथ धाय पर प्रकाश—जैम आवाज धाय के काना म आज भी गूज रही है । धाय जोर दशक साथ-साथ वतमान में आत ह ।

प्रोफेसर की लगातार तलाश के दौरान आशा निराशा के बीच का अँकुर है अधी-गूगी-बहरी लडकी जा चरम हताशा के क्षणा म प्रोफेसर और गूगी-बहरी लडकी के रिश्त का फल है—उस रिश्त का जिस के घटित होने के साथ ही प्रोफेसर खण्डहर के साथ स डँसा जाता ह—धाय जिसकी चतावनी पहले ही दे चुकी थी । यह अधी गूगी-बहरी लडकी किस का सवेन है ? यह किस अत की ओर ले जाता है हम ?

यह धाय भी क्यों लगातार देगती आ रही ह ? क्या देखते रहना ही उस की नियति ह ? क्या बाल भी देखत रहने की विवश ह ? अगर धाय जानती है सब कुछ तो बताती क्या नहीं ? लेकिन क्या वह सचमुच कुछ जानती ह या जानन का केवल भ्रम ह जिस बनाये रखना उस की नियति है । 'हूँह ? बताना हागा बीन सह पायेगा वह सब जार क्या जान रेगा फिर भी ? हर कोई अपनी तकलीफ भुगत रहा है । कोई नहीं जानता मैं क्या भुगत रही हूँ जा देखता है वह भी ता भोगता ह वह जानना चाहता है समगता है, मैं जानती हूँ । बीन क्या जानता है ? जिम न दखा उस ने भी कुछ नहीं जाना, न उस न जिस ने भागा ।'

'जा देखता ह, वह भी ता भागता ह ।' ता क्या बाल भी भागता ह जो सब कुछ का दृष्टा ह । क्या हम सब की यही नियति नहीं ह ? क्या नाटक देखत

हुए दशक भी घाय नहीं हा जाता ? आर घाय हा जाना क्या एक साथ प्राफसर, गूगी-बहरी लडकी और उही स उत्पन्न अँधी गूगी बहरी लडकी हा जाना नहीं है ?

नाटक का अ त हाता ह त्वाग तुक स जिम प्राफसर क अधूर वाम का पूरा करारा ह—तिस के माँ वाप यानी इतिहास का काइ पता नहीं ह। घाय यह सुन कर अँधी-गगी उहरी लडकी की आर देखती आर पागला की तरह हँसती ह। क्या भूत, बतमान आर भविष्य सब एन साथ मिलकर हँस रहे है ? किस पर ? क्या बतमान का अतीत स जुडे रहना अनिवाय है ? क्या अतीत स कोई छुटकारा नहीं—पर उस छुटकार के बिना मुक्ति कहा ह ? अपनी अभिशप्त नियति स मुक्ति ! हम ह यह जानना क्या काफी नहीं ?

नाटक क अभिनता ही नहीं रगन के सभी सदस्य जैस नाटक क अहसास को जी रहे थ। यही कारण रहा कि प्रदर्शन के दौरान दाना दिन में तीन बार बिजली गुल हा जा के बावजूद दशक दम साथ बैठे रह। बिजली आन पर नाटक उसी रिदम के साथ जारी हाता रहा—पान आर दशक जैस एक हा गय हा।

बेहद उत्तेजक प्रतिक्रिया हुई। लम्ब समय तक चचा हाती रही—अधिकाशन आलस को लेकर। ऐम नाटक क्या हाने चाहिए ? कहना क्या चाहता ह आखिर नाटकवार ? क्या हम सब का अतीत नाजायज है—पूरी मनुष्य जाति का। आर उमी मात्रा म प्रशंसक भी थे जो कह रहे थ कि नाटक उह अपन अपन 'मन क तण्डहरा म ल गया, कि इस नाटक को वे कभी नहीं भूल पायेंग। बहुत-सी कमिया के बावजूद यह प्रस्तुति की सफलता करन स पूरी तरह सम्प्रपित नहीं हाती—उस बार-बार पढ़ना-करना जरूरी ह। पर आज रगकमिया का इतनी सुविधा कहाँ ? फिर भी एक लम्ब अंतराल के बाद हिंदी म एक मालिक वृत्ति मिली जा बहुत ही गहर कुरदती ह मन का, धर्चन करती ह साचा का—दस के लिए हिन्दी रगमच रचनाकार का ऋणी ह।

बोक्लेर ।

—बंलाश भारद्वाज

अक प्रथम

पहला प्रवेश

एक कमरा। हल्का अँधरा है। एक ओर एक साट पर एक छाया-सी दिखाई देती है। एक आदमी है। उम्र यही कोई बत्तीस-तीस साल। पाँच भाग में स रोशनी की कुछ धाई-सी आती है। धीरे धीरे एक लड़की का प्रवेश। उम्र करीब बीस वर्ष। चेहरा गम्भीर। हाथ में लम्प लिये है। आदमी चौक पर उस की ओर देखता है। एक ओर रखी मज या ऐसी ही किसी चीज पर लम्प रख देती है—इस तरह कि आदमी का चेहरा साफ दिखाई देने लगे।

प्रोफेसर बीन हा तुम ? मैं वहीं ह ?

लड़की लम्प रख कर उस की ओर एकटक देखती रहती है। कोई जवाब नहीं देती।

मैं पूछ रहा हूँ मैं कहाँ ह ? कहाँ गया ह ? अभी लाटी क्या नहीं ? उस चिट्ठी नहीं मिली थी मेरी ? (कुछ पल ठहर कर) और तुम ? तुम बीन हा ?

लड़की चुप रहती है। प्रोफेसर कुछ देर उस की ओर देखता रहता है। फिर एक ओर पड़े सूटकेस की घसीट कर अपन सामने रख लेता है। खाल कर सामान निकालता है। कुछ कपड़े, किताबें, खुदवीन आदि। सामान चारपाई पर रखता है। इधर-उधर देखता है और एक ओर रखी मज से लम्प को उठा कर फिर इधर-उधर देखता है। लड़की फुर्ती से आग बढ़कर लम्प उसके हाथ से लेती है और एक ओर सड़ी हो जाती है। प्रोफेसर एक पल उस की ओर देखता है और फिर किताबें साट से उठा कर मेज पर रखने लगता है।

तुम बाइ गयी नाकरानी लगनी हो। तब ता तुम नहीं थी।
(गौर से उसनी ओर देखकर) बरि शायद पदा भी नहीं हुई
हागी। यही की रहन बाती हा क्या? मुझे जानती हा?

लडकी स बोइ जबाब नहीं पान पर पीछ मुड कर दसना है।
लडकी बस हा सम्प हा म लिय सडी उसी का ओर देख रही
है। कुछ युझलान का सा भाव प्राफसर के चेहरे पर आता है।
वह अचानक पीछ कर जस कुछ कहना चाहता ह पर यक-बयक
रक जाता है और बिनाव चाइ कर मेज पर बगीन स सजान
लगता है।

मरी चिटठी ना मिल ही जानी चाहिए थी। मिल गयी थी न?
फिर भी मा बाहर क्या चली गयी?

लडकी चुप ही रहती है। प्रोफसर अचानक हाथ की किताब
जोर से जमीन पर फकता है। प्रोफसर का जस अचानक समझ
म आता है कि उसे इतना उत्तजित नहीं होना चाहिए।
किताब की पुरानी जिल्द फकने की बजह से टूट गयी है और कुछ
पान बाहर निकल आय हैं। वह किताब और बिखरे पानों की
ओर मसता है। उह उठाने क लिए वह थुन इस से पूव ही लडकी
सम्प पान पर रख कर बिताय क गिस्तर पान इकट्ठ करन
लगती है। प्रोफसर लडकी की ओर दसता रहता है। लडकी
पाने एकजित पर उस देती है। वह उस की ओर गौर स दसता
हुआ पाने छ लेता ह। लडकी बापिस लप हाथ में लेकर सडी
हो जाती ह।

मरा मतलब ह कि तुम तुम जबाब क्या नहीं रनी? कितनी
देर हुई मुझे आगे कुछ पता ता च?

लडकी फिर भी असहाय सी मरनी चुप ह। प्राफसर अचानक
जार स चिल्लाता ह।

बालती क्या नहीं? जवान नहीं ह? मुनाइ नहीं दता मैं क्या
कह रहा हूँ? बहरी हा क्या?

तडकी व चहर पर परेशानी और मय क चिह्न दिखन लगे ह ।
 प्रोफसर परेशान-सा एक कोने स दूसरे कोने तक चहलकदमी
 करता ह । अचानक बीच म पड सूटकेस से ठीकर साता है—कुछ
 फिसलता सा ह ।

ओह ! क्या रग छाडा ह बीच म यह सब ?

पाव उठा कर सीटमारता हुआ अग्रूठ को दजाता ह । फिर पाव
 का जमीन पर टिका कर साट की ओर जाता ह । साट पर
 घठ जाता ह । लडकी लम्प को बीच की ओर ले जा कर पाव
 की ओर देखती ह और घमरायी-सी खडी हो जाती ह । प्रोफसर
 उस को घबराये दस कर कुछ नरम पड़ता ह ।

लेकिन तुम मरी याता का उत्तर क्या नहीं देती ? कुछ बोलन
 स था तो नहीं जाऊंगा म तुम्ह । जितनी दूर हुई ह मुझे आये ।
 माँ का भी पता नहीं । ओर तुम कुछ बताती ही नहीं ।

लडकी लैम्प मेज पर रख कर अटची से बिसरती चीजें उस म
 डालती है और अटची को चारपाई के पीछे सरका देती है । फिर
 लम्प उठान मेज की ओर जाती है ।

नाम क्या ह तुम्हारा ?

पूछता हुआ प्रोफसर चारपाई स उठ कर लडकी व पाछे जा कर
 खडा हो जाता है । लडकी लम्प उठा कर पीछे मुड़ती है तो उसे
 सामने ही खडा पा कर डर सी जाती है और लम्प मेज पर रख
 देती है । उमे चुप ही पानर प्रोफसर फिर उत्तजित हो जाता है ।

नाम पूछ रहा हूँ तुम्हारा । तुम स कह रहा हूँ, दीवार स
 नहीं ।

लडकी मिल्कुल भयभीत हा गयी है । प्रोफसर और शोधित होता
 है और लडकी को परे धमस दता है ।

मरा नहीं ता बरी जागर (लडकी गिरते गिरते बचती है ।)

माँ भी तान वहाँ भर गयी ?

अचानक धाय का प्रवेश ।

धाय मर गयी तभी तो चिल्ला रहे हा यहाँ आपर । वह थी तब वहाँ
ये ? बन्नी सवर भी ली ?

प्रोफेसर क्या ? माँ मर गयी । कब ? कैसे ? तुम ? तुम कान हा ?

धाय लडकी की ओर देखती ह । चल कर उसके पास जाती ह ।
सर पर हाथ फिराती ह ।

धाय उस के पैदा होते ही । बीस बप हान को आय । तुम्ह घर से गय
भी ता इतना ही जर्सा हुआ हागा न ? तुम्हार जाने के परोब
साल मर बाद ही तो हुई यह ।

लडकी धाय से लिपट-सी जाती ह ।

प्राफेसर य लडकी ये तुम तुम धाय हो न ?

धाय हाँ । और ये तुम्हारी बहिन ।

प्राफेसर बहिन । पर पर यह कैसे ? मा मर पिता ?

धाय क्या ? तुम कैसे पैदा हो गये थे ? बाकी सब कैसे पैदा हा
जाते है ?

प्राफेसर मैं ? ओह ।

खाट पर परेशान सा मुह छिपाकर बठ जाता ह । धाय व लडकी
उस की ओर देखती रहती ह ।

तो क्या सचमुच

लडकी लम्प को उठा कर देखती ह और उस लेकर पाइव म चली
जाती ह । मच पर हल्का अधरा हो जाता है । एक कोने म तीव्र
प्रकाशवृत्त । एक औरत बठी कुछ घरेलू काम कर रही ह । उम्र
यही कोई तीस बरस के आसपास । करीब ग्यारह-बारह बप का
एक लडका अचानक आता ह । चिल्लाता हुआ ।

लडका माँ माँ

माँ क्या है ? चिल्ला क्या रहे हा ?

लडका माँ, मेरे पिताजी वहाँ है ?

माँ कुछ दर उस की ओर देखती है ।

- माँ मन्दिर नहीं गया आज तू ?
लड़का नहीं नहीं जाना मुझे । पहले बताआ बापू कहाँ है ?
माँ तुझे बताया न बाहर गये हैं । कितनी बार तो बता चुकी हूँ ।
लड़का नहीं । तुम झूठ बोलती हो । सभी के बापू घर आते हैं तो वे क्या नहीं आते ? बताआ ।
माँ मुझे नहीं मालूम । लेकिन तुझे तकलीफ क्या है बापू के बिना ?
माँ मैं क्या प्यार नहीं करती तुम्हें ?
लड़का मुझे बापू चाहिए । बताती क्या नहीं ? कहाँ है बा ?
माँ तब मत करो । जाओ, मन्दिर जाओ । आरती का वक्त हो रहा है ।
लड़का नहीं । तुम झूठी हो । ठीक कहते हैं वे सब ।

माँ चौंकती है ।

- माँ क्या वे सब ?
लड़का यस्ती बाल ।

उत्तजित होती है ।

- माँ क्या कहत है व ?
लड़का गद्दी है तू । हाँ, ठीक कहत है गद्दी गद्दी
माँ तू तू मी ।
लड़का हाँ, गद्दी है तू गद्दी

माँ का चेहरा अचानक कठोर और विवृत हो जाता है । वह जते आवेश में आकर बोलती है ।

- माँ भारत क्या है फिर ? उसी गद्दी से पैदा हुआ कीड़ा ! तू और व सब बर्मीने । कौन जानता है किस का बाप कौन है ? बर्मीने । कुत्ता की ओलाद । और तू खून पिला कर पैदा किया तुझे खून पिलाकर पाल रही हूँ और आज तू चल निकल यहाँ से मूअर

- लड़का हाँ, हाँ चला जाऊँगा नहीं रहूँगा तुम गद्दी कुत्ता के साथ ।

शुस्मे म आकर पाद्व म चला जाता है । माँ और भी उत्तजित होकर चित्लाती हुई दूसरे पाद्व म जाती है ।

मा हाँ, चला जा । वापिस मत आना असल बाप का है ता ।
पमीना ।

प्रयासवृत्त धीरे धीरे मिट जाता है । लडकी लम्प से कर फिर पाद्व से आती है । बाकी लोग फिर साफ दिखने लगते हैं ।

प्रोफेसर तो क्या सचमुच माँ
धाय हाँ, एक तरह स लोग ठीक बहते थ । पर इतना जानती हूँ
तुम्हारी माँ बहुत प्यार करती थी तुम्ह । बहुत बूढ़ा तुम्ह पर
सुम नहीं मिले । दिन रात रोती रहती थी । तुम्हार चले जान
की वजह से पागल-सी हो गयी । पता नहीं उस बीच कैसे यह
पेट मे आ गयी । बमजोर हो गयी थी नहीं सह सकी चल
बसी ।

यह सुनता हुआ प्रोफेसर उदास हो जाता है ।

प्रोफेसर यही है वह लडकी ।
धाय हाँ, यही । तुम्हारी बहिन ।
प्रोफेसर बहिन ।
धाय क्यों ? एक ही पेट से तो पैदा हुए ?

प्रोफेसर कुछ पल चुप रहता है ।

प्रोफेसर पर यह जवाब क्यों नहीं देती मेरी बाता का ?
धाय कैसे देगी ? जन्म से ही तो गूगी बहरी है ।

प्रोफेसर कुछ लो सा जाता है । उन्गसो कुछ और धनी हो जाती है ।

प्रोफेसर क्या सोचने लगे ? सुन तो रह हो न ?
री हाँ

लडकी की ओर देखता है । लडकी की आँखें गीली सी हो रही है ।

यह जानती है मैं कौन हूँ ?

घाय हाँ तुम्हारी चिट्ठी मिली तो मैं ने समझा दिया था । इसारा मे काफी बातें समझ लेती है ।

प्रोफसर धीरे-धीरे लडकी की ओर जाता है । लडकी की आँखों से आँसू गिरते हैं । प्रोफसर के चेहरे पर उदासी, करुणा और असमजस का मिलानुला भाव है । घाय देखती रहती है । लडकी अचानक पाश्व मे चली जाती है । पीछे पीछे घाय । मच पर अँधरा हो जाता ह ।

अक प्रथम

दूसरा प्रवेश

मंच पर धीरे धीरे प्रकाश होता है। प्रोफेसर एक कोने में मेज पर चायजों का डर सामने रखे बैठे हैं।

अलग-अलग उठा कर आईग्लास या मुदवीन की सहायता से कुछ पढ़ने की कोशिश करता है। कमरे में एक नए परंपर की पुरानी मूर्तियाँ रखी हैं।

मेज पर एक गिलास में चाय रखी है एक ओर। लेकिन प्रोफेसर का ध्यान उस ओर नहीं है। वह अपने काम में डूबा हुआ है। लड़की पास में आकर देखती है। वह एक उड़ती सी नजर उस पर डाल कर फिर अपने काम में डूब जाता है। लड़की एक ओर खड़ी चारपाई पर पड़े कपड़ों की नीचे पड़ी अटची को निगल कर उस में रखती है—इस बात का ध्यान रखते हुए कि प्रोफेसर की एकाग्रता में खलल न पड़े। अचानक उस की नजर चाय के गिलास पर पड़ती है। जा कर गिलास छूकर देखती है कि चाय ठण्डी हो गयी है। गिलास उठा कर पास में चली जाती है। प्रोफेसर अचानक चौंकर उस की ओर देखता है।

प्रोफेसर अरे, ठहरा। अभी भी नहीं मर्द सुनायी ही नहीं देगा ता कस दवेगी।

फिर अपने चायजों की ओर नजर डालता है तो चौंकर उन में से एक फाटो उठाना है। यह किसी पुराने शिलालेख की फोटो प्रति है। आईग्लास में स उसे गौर से देखता है। लड़की एक दूसरे गिलास में चाय लेकर आती है और उस के हाथ से फोटो ल लेती है। प्रोफेसर चौंकर देखता है। लड़की चाय का गिलास उस के हाथ में पकड़ा देती है। वह चुस्की लेता है।

वाह! क्या चाय है। गर्मागर्म। कितना खयाल करती हो तुम मेरा।

लडकी प्रोफसर को खुश देख कर प्रसन नज़र आती है। प्रोफसर चाय का गिलास मुह तक ले जाता है। लडकी हाथ का फोटो मेज़ पर रख कर जमीन पर बठ जाती है और मुग्ध भाव से उस की ओर देखती रहती है।

लाजवाब चाय बनायी है तुम ने। लेकिन मेरे ऐसा कह देने से तुम समझोगी कैसे ?

इशारों से समझाता है कि चाय बहुत ही अच्छी बनी है। अपना घाय का प्रवेश।

घाय बहुत खुश दिख रहे हो दोनों। क्या बात है। ऐसा क्या मिला गया है ?

प्रोफेसर हाँ, लाजवाब चाय मिली है घाय माँ। यह लडकी तो दिन रात मेरे ही काम में लगी रहती है।

घाय बहिन जो है तुम्हारी। तुम्हारे सिवा इस घर है ही बौन।

प्रोफसर 'बहिन' शब्द सुनते ही अचानक धुप हो जाता है। घाय का गिलास मेज़ पर रख देता है।

क्यों ? चाय रख क्या दी ?

प्रोफेसर बस, अब इच्छा नहीं है। अब मैं जाऊँगा—हो सक्ता है मुझे देर हो जाय।

घाय कहाँ ?

प्रोफेसर पुराने मंदिरों की ओर।

घाय क्या ? अभी परसा देर रात सब वहीं तो थे तुम। क्या है उन गण्डहरो में जो बार-बार तुम वहीं जाते हो ?

प्रोफेसर यह सब तुम नहीं समझोगी घाय माँ। मैं पता लगा कर दूँगा।

घाय किस बात का पता ?

प्रोफेसर राण्डहरो के रहस्य का। किस ने बनाया उन्हें ? किस के मंदिर में वहीं ? क्यों ?

घाय बेशर बात ! मंदिर कोई हो, किसी ७ किसी देवता का ही तो होगा। और इस भाषापच्ची से पायदा भी क्या ?

प्रोफेसर मुनो, तुम कुछ जानती हो इन के बारे में ?

घाय हाँ !

प्राफेसर क्या ? क्या जानती हो तुम ! उताओ भुये । मुझे लगता था कि जरूर कुछ जानती हो ।

घाय यही कि सदा से ऐसे ही है । मैं ऐसा ही देखती आयी हूँ इन्हें हमेशा हमेशा से ।

प्रोफेसर तुम बन्नी गयी हो वहाँ ?

घाय अजीब-सा लगता है वहाँ जाकर । अजीब सा मिचाव अजीब सा डर !

प्राफेसर डर ? डर कैसा ?

घाय नहीं मालूम । पर डर सा लगने लगता है वहाँ जा कर । मन पैसा तो हो जाता है ।

दानों न चेहरों को लप कर टाङ्की भी डरी भी उन की ओर देखती रहती है ।

प्रोफेसर मैं नहीं करता लेकिन ! सब कुछ खोज निकालना है मुझे ।

घाय क्या खोज निकालना है ? खोज निकालना है । क्या कर लगे खोज निकाल कर ?

प्रोफेसर नहीं समझोगी । तुम नहीं समझोगी !

घाय क्या ? मैं घान नहीं खाती ? मैं पूछती हूँ तुम जात हो क्या हो वहाँ उन पत्थरों से सर फोड़ने ? कुछ नहीं मिलेगा वहाँ से । कभी किसी पत्थर के पीछे से कोई साप बहर मिल जाय फुफफारता हुआ ।

प्रोफेसर साँप ?

घाय हाँ, साँप । गन्ने रहस्या के रसक ह बे । पठनाओगे कभी वहे लती हूँ ।

प्राफेसर उमाना हा जाने से पछताना बेहतर है । अपने इतिहास का जानना उतना ही जरूरी है जितना माग जाता ।

घाय यह सब नहीं जानती मैं ! मुझे जमा, मैंने चेता दिया । आगे तुम जाना ।

प्रोफेसर यह सब कहने की जरूरत नहीं, घाय मा ।

जड़की की ओर नज़र जानो है । अचानक उसाह में भर जाता है ।



रूपा पारीक धाय की मुमिक्त मे ।



रूपा पारीक (धाय) और नीलम शर्मा (पूँगी बहरो लडकी) ।



रूपा पारीक (घाय) और राकेश मूया (प्रोफेसर) ।



राकेश मूया (प्रोफेसर), रूपा पारीक (घाय) और नीलम शर्मा (मूंगी बहरी लडकी) ।

लकिन म गोज तिकालूया । सब कुछ मालूम हागा एक दिन ।
सच बहता हूँ, घाय मा ।

घाय बे चेहरे पर मुस्कराहट दस बार उत्तर्जित हा जाता है ।

तुम हँस रही हो । विश्वास नहीं हाता न तुम्ह । दसो, मे देगा ।

मज पर स कुछ फाटो प्रतिधा उठा वर दिसाता है ।

देवो ! बँस पता नहीं चलेगा ?

घाय एक फाटा हाथ म लेकर दगती है । एमा भाव प्रदर्शित
परती ह जस कुछ समय मे नहा आ रहा ।

घाय कुछ भी ता नहीं है । य सब बया तिनार चाबोरवन ह माण्डणा
की तरह । यह इधर तो साप जैसा कुछ बना लगता ह ।
प्रोफेसर तभी ता बहा कि तुम नहीं समचागी ।

उसन हाथ स फाटो लंकर निस्ताना ह ।

य देवा, य । य सारा एव शिलालग है पुराना । गण्डहरा म ही
मिला ह मुचे । उसी का पोटा है यह ।

घाय एस तो कई हाग वहाँ ।
प्रोफेसर सब को ग्राज निकालूगा ।

घाय क्या लिगा है इस पर ?

प्रोफेसर वही ता । वही ता समस्या है । यही ममथ म नहीं जा रहा ।

घाय क्या ? तुम तो पढे लिग हा ?

प्रोफेसर उस स नया ? इन शिलालेवा की लिपि और भाषा कुछ अजीब
किस्म की है । पढ़े ही नहीं जा रह । बोर्ड नहीं पढ पाया अब
तक । लेकिन मे पढकर रहूंगा इस बार । इसीलिए ता लौट
जाया हूँ फिर यहाँ ।

घाय इसीलिए आय हो ? म न ता समझा था कि मा की याद खीच
लाई ह तुम्ह ।

प्रोफेसर एक बजह बह भी ह । म न यह भी साचा कि सायद अब मा
बता द ।

घाय क्या बता दे ?

प्रोफेसर यही कि कि मैं म विस का बटा हूँ ?

घाय कुछ पल चुप रहती ह ।

घाय क्या यह वाणी नहीं कि तुम अपनी माँ ने बट हो । माँ का कोद महत्त्व नहीं ? वह सब ठीक है अपनी जगह । लेकिन रेविन मा अकेली ता पैदा नहीं कर सकती थी न ? पर क्या नहीं बताया उस न ? अब मैं वहाँ जाऊँ ? विस से पूछू ? तुम ! हाँ तुम ! तुम जरूर जानती हो सब कुछ । तुम शुरू से उसके साथ रही बताओ बताओ न विस का बटा हूँ मैं मुझे इस आग से निवालो घाय माँ

घाय चुप और पठोर हो जाती ह । प्रोफेसर अचानक घाय क चेहरे की ओर देखकर उत्तजित हो जाता ह ।

बोला मा बोला ।

प्रोफेसर अपना चेहरा दानों हथलियों से छुपा सता ह । घाय वस ही खड़ी एकटक देखती रहती ह । प्रोफेसर फिर घाय की आर देता ह । अचानक उत्तजित होकर उस का गला पकड़ लता ह ।

क्या नहीं बताती ? मार डालूंगा तुम्ह । बोला जरूर जानती हो तुम बोला ।

गला दबाने का अभिनय करता ह । लडकी, जो अब तक डरी-सी देखती रही थी, दोड़कर घाय की बाह पकड़ लेती ह । प्रोफेसर की आँखें लडकी की आँखों से मिलती हैं । प्रोफेसर गला छोड़ देता ह और दूसरी ओर मुह कर खड़ा हो जाता ह ।

बताती क्यों नहीं मुझे ?

घाय मैं माँ नहीं हूँ तुम्हारी ।
प्रोफेसर लेकिन माँ ने जरूर बताया होगा तुम्ह ?
घाय नहीं ।
प्रोफेसर तुम हमेशा उस ने साथ रही ।

घाय हा ।
 प्रोफेसर वह हर बात तुम से कहती थी ।
 घाय हा ।
 प्रोफेसर तो फिर ?
 घाय तो फिर क्या ?
 प्रोफेसर ता फिर तुम्हें क्या नहीं मालूम कि कि मैं
 घाय कि तुम कैसे पैदा हुए ?
 प्रोफेसर हा ।
 घाय क्या पता स्वयं उसे ही मालूम था ।
 प्रोफेसर यह कस हा सकता है ?
 घाय बहुत सी बातों के बारे में पता नहीं चलता कि वे कैसे हो
 जाती हैं ।
 प्रोफेसर लेकिन खुद माँ को ? नहीं तुम यूँ बोलती हो । वह जानना
 चाहती हो मुझे मैं मैं पता लगाकर रहूँगा सब कुछ ।

मेज के पास जाकर इधर उधर देखता है । कुर्सी की पीठ पर
 सटका एक गोला उठा कर कंधे पर टांग लेता है । घाय और
 लड़की उस की ओर देखती रहती हैं । अचानक लड़की से आँखें
 मिलती हैं । लड़की के चेहरे पर सहानुभूति और अपनत्व के
 भाव हैं । प्रोफेसर लड़की की ओर देखता रहता है । घाय दोनों
 को देखती रहती है । मच पर धीरे धीरे अँधरा हो जाता है ।

अक द्वितीय

पहला प्रवेश

मघ पर घीरे घीरे लफ फोने म प्रकाश होता है। घाय एक फोने म यठी अना वी रहो है। लडकी बार-बार पादव की ओर जाकर पावती है और निराश हो कर वापस लौट आती ह। घाय बार-बार उसे आते जाते देखनी ह। लडकी घाय से आँखें घवाती है। अचानक लडकी फिर पादव की ओर जा कर पावती है। घाय जनाज चीनना छोडकर उसके पीछे जा सही होती हैं। लडकी के पीछे मुडते हो उसकी आँखें घाय से मिलनी हैं तो वह खडी हो रह जाती ह। घाय गीर से उस की आँखों मे देखती ह।

घाय नहीं नही जायेगा। यही आयेगा लौट कर।

लडकी घाय की ओर देखती रहती ह। घाय इशारे से उसे समझाती है। लडकी कृतज्ञता से उस की ओर देखती ह। घाय उस चारपाई पर ले जा कर बठा देता है।

रितनी ही बार तो गया है इस तरह-पर यही आया है लौट कर। इस घर से खण्डहरो और खण्डहरो से इस घर तक निवाले रहे चक्कर दया आ जाती है बन्नी-कमी तडपता देख कर पर उपाय ही क्या है यही मिला है उसे विरासत मे।

अचानक पादव मे से प्रोफसर का प्रवेश। हाफ रहा है डुरी तरह। घबराया हुआ। लडकी घबरा कर उठ खडी होती है। प्रोफसर सोचा जा कर चारपाई पर बठ जाता है। हाँफना जारी रहता है। लडकी की ओर देख कर पानी का इशारा

करता है। लड़की दौड़ कर पार्क में से पानी लेकर आती है।
आदमी गटगट पी जाता है। इधर-उधर गौर से देखता है।
अभी घर-राहट मिटी नहीं है। धाय यह सब गौर से देखती
रहती है।

धाय क्या बात है ? इतने धवराय क्यों हो ?
प्रोफेसर वो वो साँप
धाय साँप । बहूँ ?

प्रोफेसर बाहर की ओर इशारा करता है।

बाहर ?

प्रोफेसर स्वीकार में सर हिलाता है। धाय बाहर की ओर
जाती है। प्रोफेसर आगक्ति सा चारपाई से उठ जाता है।
लड़की की ओर दसता है। धाय लौट कर आती है।

कहा था ? बाहर तो नहीं दिखाई दिया।

तब तक प्रोफेसर सभल-सा आता है।

प्रोफेसर आया था पीछा करता हुआ ?

धाय फिर ?

प्रोफेसर नहीं मानूँ। मैं तो सीधा यहाँ चला आया।

धाय वहाँ मिल गया तुम्हें ?

प्रोफेसर सण्डहरा में। पुराने मन्दिर का तहगाना है शायद वहाँ

धाय बहूँतर माप हैं सण्डहरा में। छेड़ दिया होगा तुमने।

प्रोफेसर नहीं, मैंने कुछ नहीं किया।

धाय किसी जिल का तो नहीं कुरेदा ?

प्रोफेसर नहीं तो।

धाय तो फिर ? गुला घूम रहा था क्या ? पाँव पड़ गया हागा ?

प्रोफेसर नहीं।

धाय तो फिर क्या ?

प्रोफेसर मैं दिन भर सण्डहरा में घूमता रहा। गाम में घुटपुटे में पुराने
मन्दिर के पिछवाड़े की ओर चला गया। कुछ तहगाना-सा

बना हुआ है वहा। टूटी पूटी सीढ़ियाँ भी बनी है नीचे उतरने के लिए। वही एक तिनो पत्थर पर एक मूर्ति खुदी हुई थी अलग पर अजीब, बहुत अजीब। गोचा, इसे उठा कर घर ले चलू। पत्थर को दोहा हाथो स पकड़ कर हिलाने की कोशिश करने लगा कि अचानक फुकार सुनाई दी। एक दम सामने गढ़ा था साँप फण ताने घुमरा कर उलटे पावा भागा कुछ देर बाद मुड़ कर देखा तो वही साँप वैसे ही फण ताने। भागता रहा मैं जब भी पीछे देखू तो वही साँप वैसे ही फण तान। घर में आन पर वह देखो वह साँप

घबराया सा उछल कर लड़की के पीछे चला जाता है।

वह फण बचाओ वह

लड़की को पकड़ लेता है। पिछो-सी बँध जाती है। आखें फट सी जाती है। घाय लड़की की ओर देखती ह। वह भी घबराइ सी इधर उधर देख रही ह। घाय भी चारों ओर गौर से देखती ह। लड़की घाय की ओर देखने लगती है। एक अजीब भी चुप्पी छा जाती ह। घाय अचानक आगे बढ़ कर प्रोफेसर के पाता पर बप्पड़ मारती ह।

घाय वहाँ है साँप ? अब भी दिस रहा है ?

प्रोफेसर सहमा हुआ सा इधर उधर देखकर सिर हिलाता ह। मैंने पहले ही कह दिया था। तुम नहीं माने। किसी का कुछ नहीं मिला इन सण्डहरा से आज तक सिवा इन साँपों के डँस ही लेता तो

प्रोफेसर अब भी कुछ घबराया सा दिखता ह।

नहीं, अब डरने की कोई बात नहीं।

प्रोफेसर को ले जाकर चारपाई पर बिठा देती है।

कुछ देर आराम पर लो। मन ठीक हो जायेगा।

प्रोफसर घबराया मा चारपाई पर लेट जाता है।

चाय पियाग।

लट्फी को इशार स कुछ समझती ह। फिर अचानक उस वहाँ
रकने का इशारा करती ह।

ठहरो, मैं गुद घना लाती हूँ।

घाय पाइव म बली जाती ह। लडकी अर धीरे धीरे चारपाई
के पास जा कर खड़ी हानी है। नीचे बैठ कर प्राफसर के सर पर
हाथ फिरान लगती ह। प्रोफसर उस का हाथ पकड़ कर उठ
कर बैठ जाता ह। चाय का गिलास लिय घाय का प्रवण।

ला, गर्मागम पी ला। यकान मिट जायेगी।

प्रोफसर गिलास हाथ म पकड़ कर चाय की चुस्कियाँ लन लगता
ह। एक-दो बार चौंक पर इधर-उधर देखता ह।

नही डरो नही यह घर भी क्या तुम्ह राण्डहर लग रहा है?

प्रोफसर चौंक कर उस की ओर देखता ह। वह उसी की ओर
देख रही ह। वह नज़रें घुमा लेता है।

पिया, चाय पियो।

प्रोफसर चाय की चुस्की भरता ह।

सुना, ये वही मूर्ति थी न एक छोट पत्थर पर खुदी हुई एन
जवान-सी औरत लेटी है और उस पर एक बूढ़ा-सा आदमी
झुका हुआ है?

प्रोफसर सडा हो जाता है।

प्राफसर तुम्ह कैसे मालूम?

घाय वही है न? दाना का एक साँप की कुण्डली म बन्द दिखाया
गया है?

प्राफेसर तुम्हें कैसे मालूम हुआ उस के बारे में ?

घाय उस की आर दसती 'यग्यात्मक' भाव से मुस्कराता है।
प्रोफेसर सजसे सहन नहीं होता। गिलास एक ओर पटक कर
घाय को पकड़ लेता है।

बोलो। तुम्हें कैसे मालूम हुआ ? तुमने कब दली वह मूर्ति ?

घाय एकटक उस की आँखों में दसती है। वह कुछ कमजोर सा
पड़ता है। धीरे धीरे अपने हाथ कर्चा पर से हटा लेता है।

घाय मुझे क्या घमकाते हैं ? साप दिखा तो क्या हा गया ? भाग
मयो मड़े हुए ?

प्रोफेसर तुम जरूर जानती हो उस मूर्ति के बारे में मेरे बारे में, मेरे
जैसे के बारे में सत्र के बारे में बताती क्या नहीं ?
आखिर क्या मिल जायेगा तुम्हें यह सब छुपाने से।

घाय तुम्हें ही क्या मिल जायेगा यह सत्र जान कर ? तुम हो, यह बाध
क्या काफी नहीं ?

प्रोफेसर नहीं, मैं जिंदा नहीं मैं सबूतों के लिए मर जान
लेना जरूरी है।

घाय जिंदा रहने के लिए कुछ भी जानना जरूरी नहीं। जा जान
लेता है वह कई बार जिंदा ही मर जाता है। देता है इस देखो
यह नहीं जानती थी कुछ भी तुम्हारे जान से पहले—कितनी
खुश रहती थी तब।

प्राफेसर अब क्या यह दुखी रहती है ?

घाय हा।

प्राफेसर क्या ?

घाय तुम्हारे कारण।

प्रोफेसर मेरे कारण ? क्या ?

घाय तुम्हारे दुख से दुखी हो गई यह भी।

अचानक उत्तन्त्रित हो जाती है।

मैं पूछती हूँ तुम जानते हो क्या यहाँ लाट कर ?

प्राफेसर मैं नहीं जानता। पर मैं आर कहीं नहीं जा सकता था।

- घाय ता गय क्या थ माग कर ?
- प्राफेसर तब लगता था यहाँ नहीं रह सकूँगा। वही भी चले जाना चाहता था। नहीं पाई यह तू पूछे कि मैं किस का बेटा हूँ।
- घाय फिर ?
- प्राफेसर किसी त नहीं पूछा। अब निस्स तान न अपना नाम दिया मुझे। पड़ाया लिगाया भी।
- घाय ता फिर यापम क्या चले आय ?
- प्राफेसर ए रात भी तो नहीं सका फिर भी। बाप का नाम मिला गया था। लज्जत नाम से क्या होता है ? बाद जैम गीब कर बुलाता था।
- घाय माँ की याद ?
- प्राफेसर वह भी पर लगता था एक न एक दिन यही बात सकूँगा अपने पिता के बारे में। अपने जन्म के बारे में। ये लण्डन में ही, यह घर सब बुगते थे। पुरातत्त्व में रुचि है मेरी। कुछ गान भी है। एक दिन उस लण्डन की बहुत याद आयी। पला आया। साचा अब दायाद माँ भी कुछ बता दे।
- घाय मैं न तुम से पहले भी कहा था। हो सक्ता है तुम्हारी माँ का भी न मालूम हो।
- प्राफेसर ता कैसे मालूम है ? तुम बताती क्यों नहीं ?
- घाय तुम चले गया नहीं जाते कहाँ स। अपनी इस बहिन का भी ल जाओ।
- प्राफेसर बहिन को ?
- घाय हाँ, उस भी ले जाओ अपने साथ। बाई फाइदा नहीं यहाँ रहने से। बर्बाद हो जाओगे यहाँ रहने ता।
- प्राफेसर क्यों ? बर्बाद क्या हो जाऊँगा ?
- घाय कभी डेस लगा बोई सौप। इन लण्डन में तडप-तडप कर मरांग पानी भी नहीं दगा बाई।
- प्राफेसर ऐसा क्या कहती हो ? तुमने ता अपना दूध पिलाया है हम।
- घाय तभी तो कहती हूँ।
- प्राफेसर तुम्हारा कुछ भी समझ में नहीं आता। कभी तुम सेमाउती हो, तभी डराती हो। क्या चाहती हो तुम ?

अचानक उत्तजित हो जाती ह।

धाय यही कि तुम लोग पोछा आटा मरा किसी तरह अब । बच तब
 राहती रहें यह सब ।
 प्राफेसर क्या सब ?
 धाय समझत क्या नी ? बड़ा यत्नरत्न है यह सब जो तुम सब
 रह हो ।
 प्राफेसर कोई गल नहीं गऊ रहा म । उबता गयी हा ता तुम ही क्या
 नहीं चली जाती हम आदर ?
 धाय निवाल देना चाहत हा ?
 प्राफेसर नहीं तब ता तुम ही परगान हा गयी हा हम म तो फिर क्या ?
 धाय नहीं । म नहीं जा सकती बही जब तब तुम लोग यहाँ हा ।
 प्राफेसर क्या ? ऐसी क्या मजबूरी है तुम्हारी ?
 धाय सब कुछ देखते रहता होगा मुझे । तुम नहीं समझाग ।
 प्राफेसर क्या नहीं समझाग मैं ? क्या बात है ऐसी ? तुम कुछ छुपा रही
 हो तुम जरूर कुछ छुपा रही हो तुम तुम देख लूँगा वर
 तब बताना हागा तुम्ह बताना ही हागा सब ।

चुनलाता हुआ प्राफेसर पादबग चला जाता है । लड़की घबरायी
 हुई सी पीछे पीछे जाती है । सिफ धाय बची रहती है । चेहरे
 पर तनाव ।

धाय हुए बताना हागा । नीन सह पायेगा वह सब और क्या
 जान लेगा फिर भी ? हर कोई अपनी तकलीफ भुगत रहा है ।
 कोई नहीं जानता मैं क्या भुगत रही हूँ । जो देखता है वह भी
 तो भागता है वह जानता चाहता है समझता है मैं जानती
 हूँ नीन क्या जानता है ? जिस ने देगा उस ने भी कुछ नहीं
 जाना न उस ने जिस ने भोगा ।

धाय धीरे धीरे एक कोने की ओर बढ़ती जाती है । बाकी मच
 पर अँधरा होता जाता है । बान म पहुँच कर धाय घट जाती
 है । अँधरे मच की ओर ताकती है । इस कोने म अँधरा हों
 जाता है और दूसरी ओर एक हल्का प्रकाश वृत्त जिस मे एक
 युवक और युवती लेटे हुए दिखते हैं । युवती प्रथम जक के प्रथम
 प्रवेश वाली मा ह पर अभी उम्र करीब उनोस-बीस बरस की
 दिख रही ह । प्रकाश वत्त के धीरे धीरे कुछ स्पष्ट होने के साथ
 लड़की उठ कर मच की ओर पीठ कर कपड़े ठीक करने का
 अभिनय करती है । युवक भी बैसा ही करता ह ।

युवक : किन मह ठीक नहीं हुआ। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए था।
 युवती : क्या ?
 युवक : पहले विवाह होना चाहिए था।
 युवती : मुझे न जाने क्या डर-सा लग रहा था।
 युवक : डर किस बात का आखिर ?
 युवती : यही कि 'नायद भैं' बग भ चाहनी थी कि गुद का तुम्हें
 अपित वर दूँ विलगुल मेर ही जसे लगत हा तुम मुझे।
 युवक : तो विवाह तो हाता ही ?
 युवती : मैं न कहता कि मुझे डर लग रहा था।
 युवक : यही तो किस बात का डर
 युवती : कि 'नायद नायद मह विवाह' हा सन या और कोई
 संसट
 युवक : संसट क्या ?
 युवती : तुम समझते क्या नहीं ?
 युवक : तुम बताओ तब ?।

युवती कुछ दूर उलटन में रहती है। फिर एनाएव अपने पर
 नियंत्रण करती है।

युवती : आजकल पिताजी जिस तरह मुझे दगाते हैं
 युवक : क्या कह रही हो दिमाग चल गया है तुम्हारा ?
 युवती : नहीं। ठीक कह रही हूँ। तुम्हारे गुद हूँ पर मेरे तो पिता हैं।
 युवक : लेकिन लेकिन यह क्या ?
 युवती : ब कई दिना स गव मूर्ति बना रह है मुझे सामन पिठावर।
 युवक : हाँ, मुझे मालूम है।
 युवती : पर शायद तुम्हें यह नहीं मालूम कि मरी शवल मेरी माँ न बहुत
 मित्रता है।
 युवक : वे तो तुम्हारे बचपन में ही
 युवती : हाँ मूर्ति बनाते हुए जब वे मरी ओर दस्त हैं तो कई देर
 देखते ही रह जाते हैं जब वे मुझ में माँ को देखा रह हा।
 युवक : क्या उहाने कुछ
 युवती : नहीं पर मुझे दगाते हुए गम तरह सहलाते हैं मूर्ति को
 युवक : अरे मिटटी की मूर्ति (दोना कुछ पल चुप हो जाते हैं।)
 युवती : सुना, ऐसी कुछ क्या भी ता है ?

युवक क्या ?
 युवती कि किस तरह पिता ने पुत्री मे ?
 युवक मुझे लगता है यह सब तुम्हारा वहम है ।
 युवती नहीं ।
 युवक तो फिर हम यह जगह छोड़ देनी चाहिए । चलो वही और
 चलो ।
 युवती वहाँ ?
 युवक नहीं भी । चल सकोगी ?
 युवती हा ।

अचानक मूर्तिकार का प्रवेश । हाथ में चाकू लिए ह । 'युद्धोही
 चाँडाल' कहता हुआ झपट कर युवक पर चार कर देता ह ।
 एक दटनाक चीख के साथ युवक धम तोड़ देता ह । लड़की 'नहा
 नहीं' चीखती हुई युवक के पास जाती ह । मूर्तिकार तीव्र
 गजरो से लड़की की ओर देखता ह और थपट कर उस दबोच
 लेता ह । युवती अपने का छुड़ाने के लिए सघप करती ह पर
 सफल नहीं हो पाती । मच पर जँधरा हो जाता ह । थानी सी
 तरह बाद एक कोने में प्रकाश वृत्त जिस में धाय बठी ह । जँधरे
 मच को साजती हुई ।

पाय मैंने चेता दिया था उसे । पर वह बट जैसे गिप्स का शुर न
 ही जार फिर पुत्री के साथ पिता ने पागल हो गया तो
 आश्चर्य क्या जाने कहाँ चला गया कुठ ही निम बाद तो
 मचर मिली थी उस लायारिस लाग की आत्महत्या की, कहते
 ह । हुलिया मिलता था उस मूर्तिकार से क्या पता

अचानक पादक से प्राकसर और लड़की का प्रवेश ।

प्राकसर अभी सब यही बँठी है । क्या कर रही हो इस अँधर में । वसी
 ता कर ली हाती । चुप क्या है ?

पाय प्रोफसर की जार देखती ह—फिर लड़की की जार । फिर
 दोनों का ओर देख कर मुसकुराती ह । दोनों उस देखते रहते
 हैं । मच पर धीरे धीरे जँधरा हो जाता है ।

अक तृतीय

पहला प्रवेश

मच पर धीरे धीरे रोशनी होती ह । एक ओर वही लडकी बठी
कोई फटा हुआ कपडा सी रही ह । उस कुछ बढ गयी ह ।
उसके पास बठी एक अँधी लडकी अँध रही ह । उन्न करीब
पन्द्रह बष । घाय का प्रवेश । हाथ मे कुछ पोटली सी लिये ह ।
वह काफ़ी बुढ़िया गयी लगती ह । अँध रही लडकी को देख
बडबडाती ह ।

घाय फिर पडी अँध रही है । आर कुठ बाम नही है तर । दिन भर
पडे अँपते रहा बस ।

पोटली एक ओर रख कर चारपाई पर बठ जाती ह । लडकी
की ओर देख कर अचानक दयाव्र हो उठती ह ।

रेविन और कर भी गया तू । किस का पाप भुगत बीन । अच्छा,
उठ । चल टाटे कुछ । दिन भर की भूखी होगी बेचारी । इस
माँ के पास तो है ही क्या देने का ? जन्म दे दिया, यही क्या
कम है ?

हाथ पकड कर सोयी हुई लडकी को उठाती ह । बच्ची चाक
कर जागती ह । हाथा को बढा कर घाय के हाथ पर, चेहरे पर हाथ
फिरा कर पहचानने की कोशिश करती ह । स्पश परिचित सा
लगते ही लडकी के चेहरे पर मुस्कान फैल जाती है । घाय
पोटली अपनी आर खींच कर उस म से कुछ निकाल कर उस
खाने को दती ह । उस खात देख कर खुश हाती है । पहली
लडकी इस बीच यह सब गौर से देखती रहती ह । उस की
आँखें गीली हो जाती ह । घाय उस देखते ही झुगला जाती
है ।

रोती जिसे हो ? अभी तो जिन्दा हूँ मैं । सारी उम्र पड़ी ह
फिर रोने के ही लिये मैं भी पागल हूँ जो दीवारा से कह रही
हूँ । सुनेगा कौन ? मैं तैरी दोनों ही गूगी-बहरी । बेटी ऊपर स
अँधी और । सुन, तू चूल्हा जला । फिर रात अधिक हो
जायेगी ।

इशारे से पहली लडकी को चूल्हा जलान के लिए समझाती ह ।
लडकी उठकर पास में चली जाती ह ।

यह पोटली भी उधर ही रख दू ।

पोटली उठा कर पास में चली जाती ह । एक दो पल बाद
अँधी लडकी फर्श पर थपथप करती ह । एक दो पल ठहर कर
धीरे से उठती ह और राह टटोलती हुई चलती है । कोने में
पड स्टूल से टकराती ह । स्टूल पर रस्ती अटची गिर जाती ह ।
धाय जाबाज सुन कर दौड़ी आती ह ।

क्या ज़रूरत आ पड़ी थी उठने की । आ ही तो रही थी मैं
हा, पर मुझे भी क्या पता कि यहाँ कोई नहीं है ।

हाथ पकड़ कर पास में ले जाती ह । लौट कर स्टूल से गिर
पडा सामान उठा कर सहेजती है । इस घीने को छोड़ कर सारे
मच पर अँधरा हो जाता है । सामान सहेजते हुए अचानक एक
आइलास पर नजर पड़ती है । एक आस के आग लाकर
देखती है । इस घीने में अँधरा और बारी मच पर हल्का प्रकाश
पल जाता है जो धीरे धीरे थोड़ा तेज हो जाता है । प्रोफेसर
एक ओर कुछ फोटोस्टेट देख रहा है । देखते देखते अचानक
उत्तजित हो जाता है ।

प्राणसार मिल गया मिल गया

चिंत्सना सुन कर धाय पास से दौड़ी जाती है । पीछे पीछे
लडकी है ।

धाय क्या बात है ? चिंत्सा क्या रहे हो ? क्या मिल गया ?

गदमी कभी धाय को तो कभी लडकी को पकड़ कर फिरनी की तरह नाचता है ।

प्रोफेसर मेरी खुशी का अंदाजा तभी लगा सकती तुम, धाय माँ । मिल गया । अब नहीं बच सनता । अब मैं यह लिपि पढ़ रहा ही छोड़ूँगा ।

धाय खुद भी परेशान होते हो और दूसरों को भी करते हो । एग्रे तो बितनी ही बार पढ़ चुके हो तुम यह सब ।

प्रोफेसर नहीं, सचमुच । ऐसी बात ध्यान में आ गयी है कि अब यह सब पढ़ सकूँगा मैं । कुछ भी छुपा नहीं रहेगा मुझ से ।

धाय को मुस्कुराता देसफर उत्तजित हो जाता है ।

तुम समझती हो मैं पागल हो गया हूँ जो या ही चिरला रहा हूँ । देवना मैं इस बार अभी जाऊँगा मैं अभी पढ़ आऊँगा । अभी जाता हूँ ।

धाय कहा ?
प्रोफेसर मण्डहरो मे ।

धाय रात का खाना वहीं भिजवा दू ।

प्रोफेसर क्यों ?

धाय सुबह सब तो तुम फिर क्या ही लौट सकोगे ? अब जाओ तो वहीं सो जाना ।

प्रोफेसर तुम मेरा मजाक उग रही हो ।

धाय नहीं । अब मुझे वह भी बेकार लगता है ।

प्रोफेसर तुम । ओह, इस खुशी के मोने पर भी तुम ठीक है मैं अभी जाता हूँ कम से कम मंदिर के शिलालेख और उस मूर्ति का रहस्य तो आज ही खोज निकालूँगा । देवना सब सारी दुनिया दोढी आयेगी यहाँ और इस रहस्य की खोज कर सेहरा मेर सिर होगा सब को अपना सही इतिहास मुझ से मिलेगा ।

धाय तुम से ?

प्रोफेसर क्यों ? समझता हूँ सब समझता हूँ जो तुम कहना चाहती हो । मैं जो अपना इतिहास भी नहीं जानता पर वह सब स अलग नहीं है नहीं अभी बक्त नहीं है मेर पाम तुम मे उलझने का चला तुम मेरे साथ चलो ।

तडकी को साथ चलने का इशारा करता है। पादब म जाता है। तडकी पीछे पीछे जानी है। मच पर धीरे धीरे अँधरा होता है। फिर प्रकाश होता है। पादब स निवृत्त कर प्रोफेसर और लडकी मच पर आते हैं। एक कोने में पूरा अँधरा है। दोनों रोजनी वाले हिस्से में मच पर चक्कर निकाल कर एक जगह ठहर जाते हैं। प्रोफेसर उत्साहपूर्वक आइग्लास निकाल कर एक शिलालेख पढ़ने का अभिनय करता है। लेकिन शीघ्र ही उस का उत्साह क्षीण होता है। सिन हो जाता है। लडकी पारा घट पर सहानुभूतिपूर्वक देखती हुई बँचे पर हाथ रखती है। प्रोफेसर उसकी ओर देखता है।

प्रोफेसर ठीक कहती है वह। कभी नहीं पत् सकूंगा मैं यह लिपि कभी नहीं जान सकूंगा यह रहस्य यह सब रहस्य ही रहेगा हमेशा न भी सही हमेशा पर मेरे लिए तो रहेगा ही अब क्या कहें म ? कोई नहीं समझता मेरी पीड़ा कौन जान सकता है जो खुद ऐसी तपलीफ में होगा वही तो जानेगा न तुम भी नहीं समझती तुम तो समझती होगी ?

तडकी बड़ी आत्मीयता से उस की ओर देखती है। क्या व्यथपाती है। प्रोफेसर उस का हाथ पकड़ कर उस की ओर देखता है। दोनों को आँखें मिलनी हैं। प्रोफेसर अचानक उसे अपने में खींच लेता है। मच पर अँधरा हो जाता है। एक कोने में जिस में घायल बड़ी है, प्रकाश होता है। पादब आइग्लास लिये देर रही है। लडकी साम भर कर आइग्लास जोर अथ सामान अटची में रख कर उसे वापिस स्टूल पर रख देती है। अचानक किसी के खटखटाने की आवाज। पादब की ओर देखती है। सारे मच पर प्रकाश। पादब म से एक चेहरा भावता है।

नवागंतुक जी, यह मैं हूँ। अदर आ सकता हूँ ?

यह कहता हुआ वह अदर आ जाता है। वह एक युवक है। पीठ पर सफारी बग बघा है। उस उतार कर नीचे रख देता है। घायल आश्चर्य से उस की ओर देखती है।

नवागंतुक गण्डहरो के रहस्य गोजने गा। (मुछ रग कर) में यहाँ रह
सकता हूँ न ?

धाय यहाँ ?

नवागंतुक यहाँ और कोई जगह नहीं है जहाँ रहा जा सकता हो। और
फिर आप तो प्रोफेसर साहब ही मा है।

धाय माँ नहीं, धाय। मैं रहा, चाहा तो। प्राफेसर के ही कमर में
रहो। अच्छा ही है। कोई बात करने को तो मिलेगा। लेकिन
तुम हो कौन ? तुम्हारे माता पिता, परिवार ?

नवागंतुक कुछ पता नहीं। अनाथालय में पला। कोई टाल गया था वहाँ।
माँ कौन बाप कौन ? कुछ नहीं मादूम।

उदाम हो जाता है। धाय उस का ओर देख कर जँधी की ओर
दरती है। फिर उस की ओर। फिर जँधी की ओर। अचानक
जोर जोर में पागला-मी हँसने लगती है। नवागंतुक कुछ
समझ नहीं पा रहा है। आश्चर्यचकित सा धाय की ओर
देख कर लड़की और जँधी की ओर देखता है। फिर हँसनी
हुई धाय की ओर। अचानक दृश्य स्थिर हो जाता है। मच
अँधरा छा जाता है।





नन्दकिशोर आचाय

- 31 अगस्त, 1945 का बीकानेर (राज) में जन्म
- एम ए (इतिहास एवं अंग्रेजी साहित्य)
पीएच डी (इतिहास)
- स्कूल में अध्यापन, पत्रकारिता और प्रौढ शिक्षण कम के बाद सम्प्रति रामपुरिया कालेज, बीकानेर में अध्यापन।
- 'एवरीमेस साप्ताहिक में उपसम्पादन, 'नया प्रतीक' में सहसम्पादन, 'सप्ताहान्त' साप्ताहिक में सहयोग सम्पादन और काव्य पत्रिका 'चिति' तथा 'अरमरु और साप्ताहिक 'मरुदीप' का सम्पादन। 'इतबारी पत्रिका', 'राजस्थान पत्रिका' तथा 'शिविरा पत्रिका में लम्बे समय तक स्तम्भ-लेखन।
- राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा भीरा पुरस्कार से सम्मानित।
- वत्सल निधि के 'यासधारी
- जल है जहाँ (काव्य)
वह एक समुद्र था (काव्य)
शब्द भूले हुए (काव्य)
कुछ कहिये 'चौथा सप्तक' (स अंग्रेज) में संकलित अंग्रेज की काव्य तृतीया (आलोचना)
रचना का सच (आलोचना)
सर्जक का मन (आलोचना)
पागलघर (नाटक) —
दो कल्चरल पॉलिटी ऑफ दो हिंदूज (गाथ)
दो पॉलिटी इन मुक्तीतिहार (शोध)
संस्कृति का व्याकरण (समाजदर्शन)
आधुनिक विचार और सिग्ना (निष्ठा-दशन)